Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِی الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ
وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ
وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ⊙

(सूरत आले-इम्रान आयत :27)

अनुवाद: तू कह दे हे मेरे अल्लाह! सलतनत के मालिक! जू जिसे चाहे शासन प्रदान करे और जिस से चाहे छीन लेता है। और तू जिसे चाहे सम्मान प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है। भलाई तेरे ही हाथ में है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ وَعَلٰی عَبْدِهِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْد

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 30

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

21 ज़िल्कअद: 1440 हिजरी कमरी 25 वफा 1397 हिजरी शमसी 25 जुलाई 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों संसार में नजात हासिल हो और लोगों के दिलों पर फ़तह पाओ तो पाकीज़गी इख़तियार करो।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

सच्ची फ़िरासत

बल्कि सच्ची फ़िरासत और सच्ची अक्ल अल्लाह तआला की तरफ़ लौटे बिना हासिल ही नहीं हो सकती। इसी लिए तो कहा गया है कि मोमिन की फ़िरासत से डरो क्योंकि वह इलाही नूर से देखता है। सही फ़िरासत और हक़ीक़ी दानिश जैसा मैंने अभी कहा कभी नसीब नहीं हो सकती जब तक तक़्वा उपलब्ध ना हो।

अगर तुम कामयाब होना चाहते हो तो अक़्ल से काम लो। फ़िक्र करो। सोचो। चिन्तन और फ़िक्र के लिए क़ुरआन करीम में बार-बार आदेश मौजूद हैं। किताब मकनून और क़ुरआन करीम में फ़िक्र करो और नेक तबीयत हो जाओ। जब तुम्हारे दिल पाक हो जाऐंगे और इधर नेक अक़्ल से काम लोगे और तक़्वा की राहों पर क़दम मारोगे। फिर इन दोनों के जोड़ से वह हालत पैदा हो जाएगी कि

رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

आले इम्रान:192) तुम्हारे दिल से निकलेगा। इस वक़्त समझ में आजाएगा कि यह मख़लूक़ व्यर्थ नहीं बल्कि वास्तविक सृष्टा की सच्चाई और होने पर दलील करती है ताकि तरह तरह के ज्ञान तथा फ़न जो धर्म को मदद देते हैं ज़ाहिर हों।

इलहाम की रोशनी

ख़ुदा तआला ने मुसलमानों को सिर्फ अक़्ल ही के तोहफा से सम्मानित नहीं फ़रमाया बल्कि इलहाम की रोशनी और नूर भी इस के साथ प्रदान फ़रमाई है। उन्हें इन राहों पर नहीं चलना चाहिए जो ख़ुशक दार्शनिक और फिलास्फर चलाना चाहते हैं। ऐसे लोगों पर भाषा की ताकत ग़ालिब होती है और रुहानी क़ुवा बहुत कमज़ोर होते हैं। देखो क़ुरआन शरीफ़ में ख़ुदा तआला अपने बंदों की तारीफ़ में

اُولِی الْاَيْدِیْ وَالْاَبْصَارِ (सा:46)

फ़रमाता है कहीं ऊलुल अलसिनता नहीं फ़रमाया इस से मालूम हुआ कि ख़ुदा तआला को वही लोग पसंद हैं जो नज़र और ज्ञान से ख़ुदा के काम और कलाम को देखते हैं और फिर इस पर अनुकरण करते हैं और ये सारी बातें नफ़्स की पवित्रता और आन्तरिक कुव्वतों की पवित्रता के हरगिज़ हासिल नहीं हो सकतीं।

दोनों संसार में नजात को प्राप्त करने का तरीका

अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों संसार में नजात हासिल हो और लोगों के दिलों पर फ़तह पाओ तो पाकीज़गी धारण करो।

अक़्ल से काम लो और कलाम इलाही की हिदायतों पर चलो। ख़ुद अपने आप को सँवारो और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ। तब अलबत्ता कामयाब हो जाओगे। किसी ने किया अच्छा कहा है

सुख़न कज़ दिल बुरूँ आयेद नशीनद ला जुर्म बर दिल

अत: पहले दिल पैदा करो। अगर दिलों पर प्रभाव चाहते हो तो व्यावहारिक ताक़त पैदा करो। क्योंकि कर्म के बग़ैर ज़बानी ताक़त और इन्सानी क़ुव्वत कुछ लाभ नहीं पहुंचा सकती। ज़बान से ज़बानी बातें करने वाले तो लाखों हैं। बहुत से मौलवी और उल्मा कहला कर मिन्बरों पर चढ़ कर अपने आप को नायब रसूल और नबी का वारिस क़रार देकर उपदेश करते फिरते हैं। कहते हैं कि गर्व ना करो, बदकारियों से बचो मगर जो उन के अपने कर्म हैं और जो करतूतें वे ख़ुद करते हैं उनका अंदाज़ा इस से कर लो कि इन बातों का असर तुम्हारे दिलों पर कहाँ तक होता है।

कथनी तथा करनी में समानता

अगर इस प्रकार के लोग व्यावहारिक शक्ति भी रखते और कहने से पहले ख़ुद कहते तो कुरआन में لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ (सूरह अस्सफ 3)कहने की क्या ज़रूरत पड़ती? यह आयत ही बतलाती है कि दुनिया में कह कर ख़ुद ना करने वाले भी मौजूद थे और हैं और होंगे।

तुम मेरी बात सन रखो और ख़ूब याद कर लो कि अगर इन्सान की बात सच्चे दिल से ना हो और व्यावहारिक ताक़त इस में ना हो तो वह प्रभाव दायक नहीं होती। इसी से तो हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बड़ी सदाक़त साबित होती है। क्योंकि जो कामयाबी और दिलों पर प्रभाव उनके हिस्सा में आया उस की कोई तुलना मानव जाति के इतिहास में नहीं और ये सब इसलिए हुआ कि आप के कथन और कर्म में पूरी समानता थी।

मेरी इन बातों पर अमल करो

मेरी ये बातें इसलिए हैं कि ताकि तुम जो मेरे साथ सम्बन्ध रखते हो और इस सम्बन्ध के कारण से मेरे अंग हो गए हो, इन बातों पर अमल करो और अक़्ल और कलाम इलाही से काम लू ताकि सच्ची मार्फ़त और यक़ीन की रोशनी तुम्हारे अन्दर पैदा हो और तुम दूसरे लोगों को ज़ुल्मत से नूर की तरफ़ आने का कारण बनो। इसलिए कि आजकल एतराज़ों की बुनियाद तिब्बी और तबाबत और हैयत के मसलों पर है। लाज़िम हुआ कि इन उलूम की माहीयत और कैफ़ीयत से ज्ञान प्राप्त करें ताकि जवाब देने से पहले आरोप की हक़ीक़त तो हम पर खुल जाए।

उलूम जदीदा (नए ज्ञान) को प्राप्त करो

मैं इन मौलवियों को ग़लती पर जानता हूँ जो उलूम जदीदा की शिक्षा के विरुद्ध हैं वे दरअसल अपनी ग़लती और कमज़ोरी को छिपाने के लिए ऐसा करते हैं। उनके ज़हन में यह बात समाई हुई है कि उलूम जदीदा की तहक़ीक़ात इस्लाम से बदज़न और गुमराह कर देती है और वे ये क़रार दिए बैठे हैं कि मानो अक़्ल और साईंस इस्लाम से बिलकुल विपरीत चीज़ें हैं चूँकि ख़ुद फ़लसफ़ा की कमज़ोरियों को ज़ाहिर करने की ताक़त नहीं रखते इसलिए अपनी इस कमज़ोरी को छिपाने के लिए ये बात तराशते हैं कि उलूम जदीदा का पढ़ना ही जायज़ नहीं। उनकी रूह फ़लसफ़ा से काँपती है और नई तहक़ीक़ात के सामने सिज्दा करती है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 2 से 3)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (भाग-2)

अहमदिया मुस्लिम जमाअत की तारीख़ इस बात पर गवाह है कि दुनिया में जहां भी हमने मस्जिद स्थापित की हैं जो लोग इन मस्जिद में इबादत करते हैं, वे अन्य नागरिकों से हमदर्दी, मुहब्बत और ख़ुलूस में पहले से बढ़कर तरक़्क़ी करते हैं

अगर हमारी मस्जिद किसी बात पर अहमदियों को उकसाती हैं तो इंतिहापसंदी या दहशतगर्दी नहीं बल्कि सिर्फ़ मानव जाति की ख़िदमत पर और इस बात पर उकसाती हैं कि हम अपने दिल अन्य लोगों के लिए खोलें।

मस्जिद बैतुल आफ़ियत (फ़िलाडलफ़िया)का उद्घाटन आयजन के अवसर पर सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक ख़िताब

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

18 अक्तूबर 2018 ई (दिनांक जुमेरात)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह सवा छ: बजे मस्जिद बैतुल आफ़ियत (फ़िलाडलफ़िया) में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुनिया के विभिन्न देशों से द्वारा FAX और ईमेल से आने वाले पत्र और रिपोर्टें मुलाहिज़ा फ़रमाएं और हिदायतों से नवाज़ा। इसी तरह हुज़ूर अनवर की विभिन्न दफ़्तरी मामलों की अदायगी में व्यस्त रहे।

फ़ैमली मुलाक़ातें

दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मस्जिद बैतुल आफ़ियत तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। आज शाम फ़ैमिली मुलाक़ातों का प्रोग्राम था। छ: बजे हुज़ूर अनवर अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और मुलाक़ातों का आरम्भ हुआ। आज शाम के इस सैशन में 58 फ़ैमिलीज़ और 12 लोगों ने व्यक्तिगत तौर पर मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इस तरह आज कुल तौर पर 292 लोगों ने अपने प्यारे आ का से मुलाकात का सौभाग्य पाया। इन सभी लोगों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

आज फ़िलाडलफ़िया की जमाअत के अतिरिक्त बोस्टन, रो चिसटर, वलनगबर और लाइबेरिया की जमाअतों से आने वाली फ़ैमिलीज़ ने भी मुलाकात का सौभाग्य पाया। इन जमाअतों से आने वाले लोगों और फ़ैमिलीज़ तीन सौ मील से अधिक की दूरी पाँच से छ: घंटों में तय करके पहुंची थी।

आज मुलाक़ात करने वाली फ़ैमिलीज़ में बड़ी संख्या उन लोगों की थी जो पाकिस्तान से हिजरत करके यहां आए थे और अपनी ज़िन्दगियों में पहली बार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मिल रहे थे। उनकी ख़ुशी वर्णन से बाहर थी। उन्होंने अपने प्यारे आक़ा के क़ुरब में जो कुछ लम्हे गुज़ारे वे उनकी सारी ज़िन्दगी का सरमाया थे। उनमें से प्रत्येक बरकतें समेटते हुए बाहर आया और उनकी तकलीफ़ों और परेशानियाँ राहत तथा सुकून में बदल गईं।

एक नौजवान ज़ीशान तारिक़ साहिब ने बताया कि मैं दो साल पहले पाकिस्तान से हिजरत करके फ़िलाडलफ़िया अमरीका आया था। मेरी पहले कभी भी ख़लीफ़ा वक़्त से मुलाक़ात नहीं हुई थी। मुलाक़ात से पहले एक बेताबी और घबराहट थी। जैसे ही में हुज़ूर अनवर के दफ़्तर में दाख़िल हुआ तो हुज़ूर अनवर के नूरानी चेहरा पर नज़र पड़ते ही सब बेचैनी और घबराहट दूर हो गई और मुझे एक सुकून मिल गया।

एक औरत रूबीना साहिबा जो अपने बच्चों के साथ थीं, कहने लगीं कि मेरे पास शब्द नहीं हैं कि मुलाक़ात का हाल बयान करूँ। प्यारे आक़ा को अपने सामने देखकर यूं महसूस होता था जैसे साक्षात नूर आसमान से उतर आया है। मुलाक़ात के ये मुबारक लम्हे इतनी जल्दी गुज़र गए कि दिल चाहता था कि ये लंबे हो जाएं और हम ज़्यादा वक़्त हुज़ूर के क़ुरब में गुज़ारें।

एक नौजवान दाऊद अहमद बट साहिब जो चार महीने पहले पाकिस्तान से फ़िलाडलफ़िया पहुंचे थे कहने लगे कि यह मेरी ज़िन्दगी में हुज़ूर अनवर के साथ पहली मुलाक़ात थी। पाकिस्तान में यही सोचा करता था कि शायद ज़िन्दगी में कभी ख़लीफ़ा वक़्त से मिल ना सकूँगा लेकिन आज जब मैंने हुज़ूर अनवर को देखा तो यूं लगा कि खुली आँखों से एक ख़्वाब देख रहा हूँ। हुज़ूर अनवर ने मुझे एक क़लम भी प्रदान फ़रमाया।

एक दोस्त मुहम्मद असलम साहिब जो दो साल पहले पाकिस्तान से हिजरत करके फ़िलाडलफ़िया अमरीका पहुंचे हैं अपनी फ़ैमिली के साथ हुज़ूर अनवर से मिले। कहने लगे कि अल्लाह तआला की हमद और शुक्र के लिए शब्द नहीं पाता कि इस ने हमें हमारी ज़िन्दगी में ये मुबारक दिन दिखाया और हमें हुज़ूर का दीदार और क़ुरब नसीब हुआ।

एक चौबीस साला नौजवान की आँखों में आँसू आ गए और इस से बात नहीं हो रही थी। कहने लगा कि मेरे पास शब्द नहीं कि मैं बयान कर सकूं कि मैंने आज क्या पाया। मेरा एक ख़्वाब था जो आज अल्लाह तआला ने अपने विशेष रूप से अल्लाह के फ़ज़ल से पूरा कर दिया।

उम्र शरीफ़ साहिब एक अफ़्रीकन अमरीकन अहमदी हैं। महोदय चार साल पहले सुन्नी मकतबा फ़िक्र से अहमदियत में दाख़िल हुए थे। कहने लगे कि हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात को शब्द में ढाला नहीं जा सकता। हुज़ूर अनवर से मिलकर यूं एहसास होता था कि जैसे हुज़ूर अनवर एक दयालू बाप की तरह अपने रुहानी बच्चों से मिल रहे हैं। मुलाक़ात से पहले एक घबराहट थी लेकिन जैसे ही हम हुज़ूर अनवर के दफ़्तर में दाख़िल हुए और हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक पर नज़र पड़ी तो सारी घबराहट और बेचैनी दूर हो गई।

एक दोस्त नमीर भट्टी साहिब कहने लगे कि आज मेरी फ़ैमिली की पहली मुलाक़ात थी। जब हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक पर नज़र पड़ी तो आँखें चेहरा से हटती नहीं थीं। मुलाक़ात से बाहर आकर उन पर कपकपी तारी थी और कहने लगे कि मेरा जिस्म काँप रहा है। उनकी पत्नी जो पाकिस्तान से आई थीं बयान करने लगीं कि ख़लीफ़ा वक़्त से मुलाक़ात हम अक्सर पाकिस्तानियों के लिए केवल एक ख़्वाब है लेकिन आज मेरे लिए ये ख़्वाब हक़ीक़त में बदल गया। हुज़ूर अनवर से मिलकर मुझे यूं महसूस होता है कि जैसे मेरी ज़िन्दगी ही बदल गई है।

निदा आक़िल साहिबा जो पाँच साल पहले शादी करके पाकिस्तान से आई थीं, कहने लगीं कि आज हमारी पहली मुलाक़ात थी। हुज़ूर अनवर का नूर वाला चेहरा देख दिल की एक ऐसी हालत हुई कि जो कहना चाहती थी वह भूल गई। बस हुज़ूर अनवर के चेहरा को ही देखती रही। हुज़ूर अनवर मेरे नाना जान मास्टर वली उल्लाह ख़ान साहिब को जानते थे। दौरान मुलाक़ात मेरी बेटी की तरफ़ देखकर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि यह दो साल की है? प्राय लोग समझते हैं कि बेटी की उम्र अभी कम है। लेकिन हम हुज़ूर अनवर की इस बात से हैरान हो गए क्योंकि आज ही हमारी बेटी दो साल की हुई है। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए मेरी बेटी को दो साल का होने पर दो चॉकलेट प्रदान फ़रमाएं।

एक अफ़्रीकन अमरीकन दोस्त अब्दुल बदूद हाचर साहिब ने बयान किया कि उन्होंने तीन साल पहले ख़लीफ़ा वक़्त के हाथ पर लंदन में बैअत की थी। आज अपनी फ़ैमिली के साथ उनकी यह पहली मुलाक़ात थी। मुलाक़ात के दौरान हुज़ूर अनवर से निवेदन

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्ब: जुमअ:

अल्लाह तआला की हिक्मत यही थी कि ज़ैद रज़ि अपनी बीवी (हज़रत ज़ैनब रज़ि)को तलाक़ दे दें और वह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी बनें ताकि यह साबित हो कि देश के क़ानून के लिहाज़ से औलाद क़ानून क़ुदरत वाली औलाद की तरह नहीं होती।

नबी अकरम के आज़ाद किए गए ग़ुलाम, इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात मुर्ति बदरी सहाबी रसूल हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ी अल्लाह अन्हो की मुबारक सीरत का दिल में उतरने वाला वर्णन

नबी अकरम के साथ उम्मुल मोमनीन हज़रत ज़ैनब पुत्री जहश रज़ी अल्लाह अन्हा के निकाह के बारे में और अधिक विस्तार, इस बारे में कमज़ोर रिवायतों से प्रभावित

पाश्चात्य विद्वानों के बेहूदा आरोपों की समीक्षा और उन आरोपों का तर्कपूर्ण उत्तर।

प्रिया मर्यम सलमान गुल की वफ़ात। मरहूमा का ज़िक्र ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा (हाज़िर)

आदरणीय डाक्टर ताहिर अहमद अज़ीज़ साहिब साहिब इस्लामाबाद पाकिस्तान और आदरणीय इफ्तेख़ार अहमदा साहिब अमरीका का अफसोस वाली वफात पर उन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जुम्अ: के बाद नामज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 21 जून 2019 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक,इस्लामाबाद सर्रे, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बा में मैंने हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ि के बारे में बात कर रहा था, और इस विषय में बात हो रही थी कि हज़रत ज़ैनब पुत्री जहश से हुई थी। इस संदर्भ में मैंने कहा कि कुछ और चीजों का वर्णन होने वाली हैं।

हज़रत ज़ैनब पुत्री जहश की उम्र शादी के समय 35 साल थी, और अरब की स्थिति के अनुसार, यह उम्र इस तरह की थी कि इस आयु को बुज़ुर्ग उम्र, बड़ी आयु वाले की तरह कहना चाहिए। हज़रत ज़ैनब एक बहुत ही मुत्तकी और विनम्र और नेक औरत थीं। अत: बावजूद इस के आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सारी पत्नियों में से ज़ैनब ही वह पत्नी थी जो हज़रत आयशा का मुकाबला करती थीं और उनकी बराबरी की बात करती थीं। हज़रत आयशा रज़ि इन के व्यक्तिगत तक्वा तथा पवित्रता की बहुत प्रशंसा करती थीं और प्राय कहा करती थीं कि मैंने ज़ैनब से अधिक नेक औरत नहीं देखी और यह कि वह बहुत मुत्तकी सच बोलने वाली और रिश्तेदारों से भलाई करने वाली बहुत सदक़ा तथी ख़ैरात करने वाली और नेकी तथा अल्लाह तआला का सानिध्य प्राप्त करने के कर्मे में बहुत आगे थीं। बस इतनी सी बात थी कि इन की तबीयत थोड़ा तेज़ थी मगर तेज़ी के बाद वह शीघ्र ही शर्मिन्दा हो जाया करती थीं। सदका तथा ख़ैरात में इन का यह स्थान था कि हज़रत आयशा रिवायत करती हैं कि एक बार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हम से फरमाया कि.......... अर्थात तुम में से जो लम्बे हाथ वाली है वह मेरी वफात के बाद से पहले फौत हो कर मेरे पास पहुंचेगी। हज़रत आयशा कहती हैं कि हम ने उस से जाहरी हाथ समझा परन्तु जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वफात के बाद सब से पहले ज़ैनब बिन्त जहश की वफात हुई तो तब जाकर हम पर यह राज़ हम पर खुला कि हाथ से मुराद सदका तथा ख़ैरात का हाथ था न कि ज़ाहरी हाथ।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब लिखते हैं कि जैसा कि सोचा जाता था कि हज़रत ज़ैनब की शादी पर मदीना के मुनाफकीन की तरफ से आरोप लगाए गए और उन्होंने स्पष्ट रूप से आरोप लगाए कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने बेटे कि बहु से शादी कर के मानो अपनी बहू को अपने ऊपर हलाल कर लिया है परन्तु जब शादी की रस्म ही अरब की इस जाहलाना रस्म को मिटाना था तो फिर इन लांछनों का सुनना भी आवश्यक था। इस स्थान पर यह भी वर्णन करना ज़रूरी है कि इब्ने साद तथा तिब्री इत्यादि ने हज़रत ज़ैनब के बारे में एक बहुत ही ग़लत तथा बिना बुनियाद के एक रिवायत वर्णन की है और चूंकि इस से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बरकत वाली ज़ात पर आरोप का अवसर मिलता है इस लिए कुछ मसीही इतिहासकारों ने इस रिवायत को बहुत घिनौना रूप देकर अपनी पुस्तकों में वर्णन किया है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ैनब पुत्री जहश की शादी ज़ैद के साथ कर दी तो उस के बाद आप किसी मौक़ा पर ज़ैद रज़ि की तलाश में उनके मकान पर तशरीफ़ ले गए। इस वक़्त संयोग से ज़ैद बिन हारसह रज़ि अपने मकान पर नहीं थे। अत: जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम ने दरवाज़े से बाहर खड़े हो कर ज़ैद रज़ि को आवाज़ दी तो ज़ैनब रज़ि ने अंदर से जवाब दिया कि वह मकान पर नहीं हैं और साथ ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आवाज़ पहचान कर वह लपक कर उठीं और निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल मेरे माता पिता आप पर क़ुर्बान हों आप अन्दर तशरीफ ले आएं परन्तु आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मना किया और वापस लौटने लगे।

अब यह रिवायत करने वाले इस तरह कि रिवायत लिखते हैं कि चूंकि हज़रत ज़ैनब घबरा कर जल्दी से उठ खड़ी हुईं कि उन के शरीर पर चादर नहीं थी और मकान का दरवाज़ा खुला था आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उन पर नज़र पड़ गई और आप नऊज़ बिल्लाह उन के सुन्दरता से प्रभावित होकर ह गुनगुनाते हुए वापस लौटे कि........... कि पवित्र है वह अल्लाह जो सारी प्रशंसा वाला है और पवित्र है वह अल्लाह जिस के हाथ में लोगों के दिल हैं जिधर चाहता है लोगों के दिलों को फेर देता है। जब ज़ैद बिन हारिसा वापस आए जो ज़ैनब रज़ि ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर आने की घटना वर्णन की और ज़ैद के पूछने पर कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्या फरमाते थे तब ज़ैनब ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के यह शब्द वर्णन किए और कहा कि मैंने तो निवेदन किया था कि आप अन्दर पधारे परन्तु आप ने मना किया और वापस तशरीफ ले गए। यह सुन कर ज़ैद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में गए और कहा कि शायद आप को ज़ैनब पसन्द आ गई है अगर आप पसन्द फरमाएं तो मैं इस को तलाक दे देता हूं। और आप इस के साथ शादी कर लें आप ने फरमाया कि अल्लाह का तक्वा धारण करो और ज़ैनब को तलाक़ न दो। यह रिवायत लिखने वाले लिखते हैं कि परन्तु इस के बाद फिर ज़ैद ने ज़ैनब को तलाक दे दी. यह वह रिवायत है जो इब्न साद और तिबरी इत्यादि ने इस अवसर पर बयान की है और यद्यपि इस रिवायत की ऐसी व्याख्या की जा सकती है जो कुछ आरोप के योग्य नहीं, बिलकुल काबिल एतराज़ नहीं होगी मगर हक़ीक़त यह है कि यह क़िस्सा सिर से लेकर पैर तक केवल ग़लत और झूठ है और रिवायत तथा दिराएत हर तरह से इस का झूठा होना जाहिर है। रिवाय से तो इस क़दर जानना काफ़ी है कि इस क़िस्से के रावियों में अधिकतर

वाक़दी और अब्दुल्लाह बिन आमिर असुलमी का माध्यम आता है और यह दोनों आदमी मुहक़्क़िक़ीन के नज़दीक बिलकुल कमज़ोर और भरोसा के अयोग्य हैं यहां तक कि वाक़दी तो अपनी झूठ बोलने और झूठ कहने में ऐसी शौहरत रखता है कि शायद मुसलमान कहलाने वाले रावियों में इस की कोई तुलना नहीं मिलती। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि और इस के मुक़ाबला में वह रिवायत जो हमने धारण की है जिस में ज़ैद रज़ि का आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर ज़ैनब रज़ि की बदसुलूकी की शिकायत करना बयान किया गया था, (वह पिछले ख़ुत्बे में बयान हुई थी) और इस के मुक़ाबले में आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम का फ़रमान बयान किया गया था कि तुम का तक़्वा धारण करो और तलाक न दो यह रिवायत जो है यह बुख़ारी की है जो दोस्त तथा दुश्मन के निकट कुरआन शरीफ के बाद इस्लामी इतिहास का सब से प्रमाणिक माध्यम है जिस के विरुद्ध कभी किसी आरोप लगाने वाले को उंगली उठाने का साहस नहीं हुआ। अत: रिवायत के नियमों के अनुसार दोनों रावियों के महत्त्व का प्रकट होता है।

इसी तरह, अक्ल से भी देखा इब्ने साद इत्यादि की रिवात ग़लत होने में कोई शक नहीं रह जाता जब यह बात प्रमाणित है कि ज़ैनब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फूफेरी बहन थीं यहां तक कि आप ने ही वली बन कर ज़ैद बिन हारिसा से आप की शादी की थी दूसरी तरफ इस बात से भी किसी को इन्कार नहीं हो सकता कि अब तक मुसलमान औरतें पर्दा नहीं किया करती थीं बल्कि पर्दा के बारे में आरंम्भिक आदेश आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत ज़ैनब की शादी के बाद नाज़िल हुए थे तो इस अवस्था में यह विचार करना कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ैनब को पहले कभी नहीं दखा था केवल उस समय संयोग से नज़र पड़ गई थी और आप उन पर आशिक हो गए थे एक स्पष्ट और खुला झूठ है यक़ीनन इस से पहले आप ने हज़ारों बार ज़ैनब को देखा होगा और उनके जिस्म की सुन्दरता तथा कुरूपता जो कुछ भी था आप पर स्पष्ट था और यद्यपि ओढ़नी के साथ देखना और ओढ़नी के बिना देखना कोई फ़र्क़ नहीं रखता लेकिन जब रिश्ता इतना क़रीब का था और पर्दे की रस्म भी और हुक्म भी इस वक़्त शुरू नहीं हुआ था और हर वक़्त की मेल मुलाक़ात थी तो अधिक विचार यह है कि आप को कई बार उन्हें बग़ैर ओढ़नी के देखने का संयोग भी हुआ होगा और ज़ैनब रज़ि का आप को अंदर तशरीफ़ लाने के लिए निवेदन करना ज़ाहिर करता है कि इस वक़्त उनके शरीर पर इतने कपड़े ज़रूर थे कि वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने होने के लिए तैयार थीं। अत: जिस दृष्टि से भी देखा जाए यह क़िस्सा एक केवल झूठा और बनावटी क़िस्सा क़रार पाता है जिसके अंदर कुछ भी हक़ीक़त नहीं और अगर इन दलीलों के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस कामिल दर्जा मुक़द्दस और नेक ज़िन्दगी को भी सामने रखा जाए जो आप की हर हरकत तथा स्कून से स्पष्ट और ज़ाहिर था तो फिर तो इस व्यर्थ और फ़ुज़ूल रिवायत का कुछ भी बाक़ी नहीं रहता और यही वजह है कि मुहक़्क़िक़ीन ने इस क़िस्से को क़तई तौर पर झूठा और बनावटी क़रार दिया है। जैसे अल्लामा इब्न-ए-हिज्र ने फ़तह अल्बारी में, अल्लामा इब्ने कसीर ने अपनी तफ़सीर में, अल्लामा जरक़ानी ने शरह मौअहिब में वज़ाहत के साथ इस रिवायत को सरासर झूठा क़रार देकर उस के ज़िक्र तक को सदाक़त का अपमान समझा है और यही हाल दूसरे मुहक़्क़िक़ीन का है। और मुहक़्क़िक़ीन पर ही बस नहीं बल्कि हर आदमी जिसे द्वेष ने अंधा नहीं कर रखा वह इस ब्यान को जो हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने भी लिखा है कि हम ने क़ुरआन शरीफ़ और सहीह हदीसों की बिना पर प्रस्तुत किया है इस लचर और नज़र न डालने योग्य क़िस्से पर तर्जीह देगा जिसे कुछ मुनाफ़क़ीन ने अपने पास से घड़ कर रिवायत किया और मुस्लमान मुअर्रिख़ीन ने जिनका काम सिर्फ हर किस्म की रिवायतों को जमा करना था उसे बग़ैर किसी तहक़ीक़ के अपनी तारीख़ में जगह दे दी और फिर कुछ ग़ैर मुस्लिम मुअर्रिख़ीन ने मज़हबी द्वेष से अंधा हो कर उसे अपनी किताब का हिस्सा बनाया।

इस बनावटी क़िस्से के बारे में यह बात भी याद रखनी चाहिए। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने यह अपनी सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन में लिखा है कि यह ज़माना इस्लामी तारीख़ का वह ज़माना था जबकि मदीना के मुनाफ़क़ीन अपने पूरे ज़ोर में थे और अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल के नेतृत्व में उनकी तरफ़ से एक बाक़ायदा साज़िश इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक को बदनाम करने की जारी थी और उन का यह तरीक़ था कि झूटे और बनावटी क़िस्से घड़-घड़ कर ख़ुफ़िया ख़ुफ़िया फैलाते रहते थे या असल बात तो कुछ होती थी और वह उसे कुछ का कुछ रंग देकर और इस के साथ सौ किस्म के झूठ शामिल करके उस की छुप छुप कर इशाअत शुरू कर देते थे। अत: क़ुरआन शरीफ़ की सूरा एहज़ाब में जिस जगह हज़रत ज़ैनब रज़ की शादी का ज़िक्र है इस के साथ साथ मुनाफ़क़ीन मदीना का भी ख़ास तौर पर ज़िक्र किया गया है और उन की शरारतों की तरफ़ इशारा करके अल्लाह तआला फ़रमाता है

لَئِنۡ لَّمۡ یَنۡتَہِ الۡمُنٰفِقُوۡنَ وَ الَّذِیۡنَ فِیۡ قُلُوۡبِہِمۡ مَّرَضٌ وَّ الۡمُرۡجِفُوۡنَ فِی الۡمَدِیۡنَۃِ لَنُغۡرِیَنَّکَ بِہِمۡ ثُمَّ لَا یُجَاوِرُوۡنَکَ فِیۡہَاۤ اِلَّا قَلِیۡلًا

अर्थात अगर मुनाफ़िक़ लोग और वे लोग जिनके दिलों में बीमारी है और मदीना में झूठी और फ़ित्ना फैलाने वाली ख़बरों को फैलाने वाले लोग अपनी इन कार्यवाईयों से रुक न जाऐं तो फिर हे नबी हम तुम्हें उनके ख़िलाफ़ हाथ उठाने की इजाज़त देंगे और फिर ये लोग मदीना में नहीं ठहर सकेंगे परन्तु थोड़ा। इस आयत में स्पष्ट रूप से इस क़िस्सा के झूठा होने की तरफ़ उसूली इशारा किया गया है। फिर जैसा कि आगे चल के ज़िक्र आता है उसी ज़माना के क़रीब क़रीब हज़रत आयसा रज़ि के ख़िलाफ़ झूठ लगाए जाने की भी ख़तरनाक घटना पेश आई और अब्दुल्लाह बिन अबी और इस के बददयानत साथियों ने इस झूठ की इतनी चर्चा की और ऐसे ऐसे रंग देकर उस को फैलाया की कि मुसलमानों पर इन का सुख का ज़माना तंग हो गया और कई कमज़ोर तबीयत और अज्ञान मुसलमान भी उनके इस गंदे प्रोपेगंडा का शिकार हो गए। अत: यह ज़माना मुनाफ़िक़ों के ख़ास ज़ोर का ज़माना था और उन का सबसे ज़्यादा दिल पसंद तरकी यह था कि झूठी और गंदी ख़बरें उड़ा उड़ा कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम और आप से सम्बन्ध रखने वालों को बदनाम करें और ये ख़बरें ऐसी होशियारी के साथ फैलाई जाती थीं कि कई बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम और आप के बड़े बड़े सहाबा रज़ि को तफ़सीली ज्ञान ना होने की वजह से उनकी तरदीद का मौक़ा भी नहीं मिलता था और अन्दर ही अन्दर उनका ज़हर फैलता जाता था। ऐसी अवस्था में कुछ बाद में आने वाले मुसलमान जो ज़्यादा तहक़ीक़ और अनुसंधान के आदी नहीं थे उन्हें सच्चा समझ कर उनकी रिवायत शुरू कर देते थे और इस तरह ये रिवायतें वाक़दी इत्यादि की किस्म के मुस्लमानों के जो मजमुए थे उन में रास्ता पा गईं मगर जैसा कि बयान किया जा चुका है सही हादीसों में उनका नामो -निशान तक नहीं पाया जाता और ना मुहक़्क़िक़ीन ने उन्हें क़बूल किया है।

ज़ैनब पुत्री जहश रजि के क़िस्सा में सर विलिय्म म्यूर ने जिनसे यक़ीनन एक बेहतर ज़ेहनीयत की उम्मीद की जाती थी वाक़दी की ग़लत और बनावटी रिवायत को क़बूल करने के इलावा इस अवसर दिल को दुखाने वाला ताना भी किया है। वह आरोप लगाने वाला था। उनसे तो यही उम्मीद होनी चाहिए थी और फिर जब हवाला मुस्लमानों का मिल जाए तो फिर उनको और अधिक ताना करने का भी मौक़ा मिल जाता है कि गोया बढ़ती हुई उम्र के साथ साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम की नफ़सानी इच्छाएं भी तरक़्क़ी करती जाती थीं (नऊज़-बिल-लाह) और म्यूर साहिब आप के हर्म की जो वृद्धि थी, शादियों में इज़ाफ़ा था इस को म्यूर साहिब इसी भावना पर आधारित क़रार देते हैं। यही कहते हैं कि यह नफ़सानी इच्छाएं थीं, नऊज़ बिल्लाह। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने लिखा है कि मैं भी एक इतिहासकार की हैसियत से इस बात को बग़ैर किसी मज़हबी बेहस में पड़ने के ब्यान करता हूँ मगर तारीख़ी घटनाओं को एक ग़लत रास्ते पर जब डाला जाता है तो उसे देखकर इस घलत और अन्यायपूर्ण तरीक़ा के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद करने से रुका नहीं रह सकता। अत: इलावा मज़हबी भावनाओं के और फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम के तक़द्दुस के सवाल के, जिस पर एक हक़ीक़ी मुसलमान और एक मोमिन तो अपनी जान भी क़ुर्बान कर सकता है , अक्ली और तारीख़ी हक़ीक़तें जो हैं वे भी इस बेहूदा बात का इन्कार करती हैं।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब लिखते हैं कि वास्तव में यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक से अधिक विवाह किए और यह भी प्रमाणिक इतिहास का हिस्सा है कि इलावा, हज़रत ख़दीजा रज़ि की आपकी सभी शादियां इस ज़माना से सम्बन्ध जिसे रखती हैं जिसे बुढ़ापे का ज़माना कहा जाता है। परन्तु बिना किसी तारीख़ी गवाही के बिल्कुल स्पष्ट और साफ तारीख़ी गवाही के विरुद्ध यह विचार करना कि आप की ये शादियां

नऊज़ बिल्लाह शारीरिक इच्छाओं की नऊज़ बिल्लाह पूर्ति का साधन थी एक इतिहासकार की शान से बहुत दूर है । म्यूर साहिब इस बात से अनभिज्ञ नहीं थे कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पच्चीस साल की आयु में एक चालीस वर्ष की अधेड़ आयु की औरत से शादी की थी और फिर पच्चास साल की आयु तक इस रिश्ता को इस ख़ूबी तथा वफादारी के साथ निभाया कि जिस की तुलना नहीं मिलती और इस के बाद भी आप ने 55 वर्ष की आयु तक व्यावहारिक रूप से एक पत्नी ही रखी और यह बीवी भी हज़रत सौदा संयोग से एक विधवा और अधेड़ आयु की औरत थीं और इस समस्त समय में जो नफ़्सानी जोश के उभरने का ज़माना है आप को कभी दूसरी शादी का विचार तक न आया। म्यूर साहिब इस तारीख़ी घटना से भी अनजान नहीं थे जब मक्का वालों ने आप के तब्लीग़ से तंग आकर और इन को अपने क़ौमी धर्म को ख़राब करने वाला जान कर आप के पास उतबा बिन रबीया को बतौर एक वफद के भेजा और आप के पास बहुत भरपूर निवेदन किया कि आप अपनी इन कोशिशों से रुक जाएं और दौलत तथा रियासत की लालच देने के अतिरिक्त एक यह भी निवेदन किया कि अगर आप किसी सुन्दर लड़की से शादी करके हम से ख़ुश रह सकते हैं और हमारा धर्म को बुरा भला कहना से रुक सकते हैं तो आप जिस लड़की को पसन्द करें हम आप के साथ इस की शादी करवा देते हैं। इस समय आप की आयु भी कुछ अधिक न थी और शारीरिक शक्ति भी बाद के जमाना की तुलना में बेहतर थी मगर जो जवाब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का के इन रईसों के वफद को दिया वह भी तारीख़ का एक ख़ुला हुआ पृष्ठ है जिस की दुहराने की हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब लिखते हैं कि ज़रूरत नहीं है और यह तारीख़ी घटना भी म्यूर साहिब की नज़र से ओझल नहीं होगी कि मक्का के लोग आप को आप के बेअसत से पहले अर्थात चालीस वर्ष की आयु तक एक बेहतरीन आचरण वाला इन्सान समझते थे परन्तु बावजूद इन सारी गवाहियों के म्यूर साहिब का यह लिखना के 55 वर्ष की आयु के बाद एक तरफ आप की शारीरिक क्षमता में अपने आप कमी होने लगी थी और दूसरी तरफ आप की व्यस्तता इतनी बढ़ गई थी कि जो कि एक व्यस्त से व्यस्त इन्सान को भी शर्मा देती थीं तो आप भोग विलास करने लगे। यह हरगिज़ को कोई द्वेष से रहित बात नहीं समझी जा सकती। नि:सन्देह यह द्वेष से भरा हुआ रिमार्क है कहने को तो कोई आदमी जो चाहे कर सकता है और उस की ज़बान तथा क़लम को रोकने की किसी में कोई ताकत नहीं होती परन्तु अक्ल वाले को चाहिए कि कम से कम कोई इस तरह की बात न कहे जो दूसरों की नेक अक्ल स्वीकार करने को तैय्यार न हो। म्यूर साहिब तथा उन के साथ के लोग अगर अपनी आंख़ों से द्वेष की पट्टी उतार कर देखते तो उन्हें मालूम होता कि केवल यह बात है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शादिया आप के बुढ़ापे की आयु से सम्बन्ध रखती है इस बात की दलील है कि वह शारीरिक आवश्यकताओं के लिए नहीं थीं बल्कि इन के पीछे कोई दूसरा उद्देश्य भी छुपा हुआ था विशेष रूप से जब कि यह एक तारीख़ी हकीकत है कि आप ने अपनी जवानी के दिन इस अवस्था में गुज़ारे जिस के कारण से आप ने अपनों तथा बेगानों से अमीन का सम्बोधन पाया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब लिखते हैं और हर पढ़ने वाले के, इतिहास जानने वाले के निसन्देह वही भावनाएँ हैं कि इस बात के अध्ययन से मुझे एक आध्यात्मिक आन्नद होता है कि आप की आयु के जिस ज़माना में आप की शादियां हुईं जब कि आप पर आक के नबुव्वत के कार्यों का सब से अधिक बोझ था और अपनी इन असंख्य और भारी ज़िम्मेदारियों की अदायगी में आप बिलकुल लीन हो रहे थे और हर इंसाफ़ पसंद, शरीफ़ इन्सान के नज़दीक केवल यह मंज़र ही इस बात की एक दलील है कि आप की ये शादियां आप के नबुव्वत के फ़राइज़ का हिस्सा थीं जो आप ने अपनी घरेलु ख़ुशी को बर्बाद करते हुए तब्लीग़ तथा तब्लीग़ के उद्देश्यों के अधीन की थीं। एक बुरा आदमी दूसरे के कर्मों में बुरी नीयत तलाश करता है और अपनी गंदी हालत की वजह से कई बार दूसरे की नेक नीयत को समझ भी नहीं सकता मगर एक शरीफ़ इन्सान इस बात को जानता और समझता है कि कई बार एक ही कर्म होता है जिसे एक गंदा आदमी बुरी नीयत से करता है मगर उसी को एक नेक आदमी नेक और पाक नीयत से कर सकता है और करता है।

फिर ये भी स्पष्ट होना चाहिए कि इस्लाम में शादी का उद्देश्य यह नहीं है कि मर्द और औरत अपनी नफ़सानी इच्छाओं के पूरा करने के लिए इकट्ठे हो सकें बल्कि यद्यपि इन्सानी नस्ल को जारी रखने के लिए मर्द तथा औरत का इकट्ठा होना निकाह की एक जायज़ ग़र्ज़ है मगर इस में बहुत से और पवित्र उद्देश्य भी समक्ष हैं। अत: एक इन्सान की शादियों की वजह तलाश करते हुए ,जिसकी ज़िन्दगी की हर हरकत और सुकून उस की बे नफ़सी और पाकीज़गी पर एक दलील है ,गंदे आदमियों की तरह गंदे विचारों की तरफ़ माइल होने लगना उस आदमी को तो हरगिज़ कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता जिसके बारे में यह राय लगाई जाती है मगर राय लगाने वाले, देने वाले के अपने भीतर का आईना ज़रूर समझा जा सकता है। मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि अत: इस से अधिक इस आरोप के जवाब में, मैं कुछ नहीं कहता कि وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ कि अल्लाह ही है जिस से इस बात पर मदद मांगी जा सकती है जो तुम वर्णन करते हो।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 549 से 555)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि ने भी इस शादी और निकाह के हवाले से एक बात अपने एक निकाह के ख़ुत्बा में बयान फ़रमाई थी वह भी मैं पढ़ देता हूँ। आप रज़ि फ़रमाते हैं कि

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम ने अपनी फ़ूफी की लड़की का निकाह ज़ैद रज़ि से कराया। हम यह नहीं कह सकते कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम ने इस्तिख़ारा नहीं किया होगा। दुआएं नहीं की होंगी। अल्लाह ताला पर भरोसा ना किया होगा। तवक्कुल नहीं किया होगा। ये सब बातें रसूल करीम सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम ने की होंगी। आप ने इस्तिख़ारा भी किया होगा। दुआएं भी की होंगी मगर बावजूद उस के अल्लाह तआला ने आप की कोशिश को सफल नहीं किया। आप रज़ि लिखते हैं ये नुक्ता बयान फ़र्मा रहे हैं कि असल वजह इस बात की यह थी कि अल्लाह ताआला ये बात लोगों पर ज़ाहिर करना चाहता था कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम की पुत्र वाली औलाद नहीं है चाहे कानून क़ुदरत वाली औलाद हो या कानून मुल्क वाली, (जो बच्चे adopt कर लेते हैं वह मुल्की क़ानून के अधीन औलाद माने जाते हैं।) कानून क़ुदरत के अनुसार तो आप का कोई पुत्र नहीं था मगर मुल्की दस्तूर और इस वक़्त के कानून शरीयत के अनुसार आप की औलाद मौजूद थी जैसा कि ज़ैद रज़ि थे। लोग उन्हें इब्ने मुहम्मद रज़ि कहा करते थे। हज़रत ज़ैनब रज़ि के निकाह की घटना से ख़ुदा तआला ने यह बताया कि औलाद वही होती है जो कानून क़ुदरत के अनुसार हो अर्थात जिस्मानी औलाद हो। कानून मुल्क वाली औलाद हक़ीक़ी औलाद नहीं होती। (जो adopt किए हुए बच्चे होते हैं वे भी हक़ीक़ी औलाद नहीं होती) और ना शरीयत ने हक़ीक़ी औलाद के लिए जो क़वनू रखे हैं वे दूसरों पर लागू होते हैं। इस बात को क़ायम करने के लिए एक अकेला तरीक़ा यही था कि हज़रत ज़ैद रज़ि की तलाक वाली औरत के साथ रसूल करीम सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम निकाह फ़रमाते। अल्लाह ताला ने ज़ैद रज़ि और इस की बीवी के मतभेदों को दूर ना होने दिया। अल्लाह तआला चाहता तो दूर हो सकता था लेकिन नहीं दूर होने दिया। बावजूद उस के कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम ने इस्तिख़ारा भी किया था। दुआएं भी की थीं। अल्लाह तआला पर भरोसा किया था। कोशिश की थी ,मगर हिकमत इलाही यही थी कि ज़ैद रज़ि अपनी बीवी को तलाक़ दे दें और वह रसूल करीम सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम की ज़ौजीयत में जाए ताकि यह साबित हो कि क़ानून मुल्की के लिहाज़ से औलाद कानून क़ुदरत वाली औलाद की तरह नहीं होती। यह भी एक नुक्ता है जो इस शादी की हिक्मत के पीछ आप रज़ि ने बयान फ़रमाया ।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद रज़ि जिल्द 3 पृष्ठ 390-391)

आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम का आज़ाद किए ग़ुलामों के साथ जो बर्ताव था उस के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि सीरत ख़ातमुल् अंबिया में लिखते हैं कि

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम का यह तरीक़ा था कि लोगों के पुराने ख़्यालात के सुधार के उद्देश्य से आप ग़ुलामों और आज़ाद किए ग़ुलामों में से काबिल लोगों का सम्मान का ख़्याल दूसरे लोगों की तुलना में ज़्यादा रखते थे। अत: आप ने बहुत से अवसरों पर अपने आज़ाद किए ग़ुलाम ज़ैद बिन हारसह रज़ि और उन के लड़के उसामा बिन ज़ैद रज़ि को जंगी मुहिमों में अमीर निर्धारित

फ़रमाया और बड़े बड़े इज़्ज़त वाले और सम्मान वाले सहाबियों को उनके अधीन रखा और जब नासमझ लोगों ने अपने पुराने विचारों की बिना पर आप के इस कर्म पर ऐतराज़ किया तो आप ने फ़रमाया....तुम लोगों ने उसामह रज़ि के अमीर बनाए जाने पर भी आरोप किया है और इस से पहले तुम उस के बाप ज़ैद रज़ि की इमारत पर भी आरोप लगा चुके हो मगर ख़ुदा की क़सम जिस तरह ज़ैद रज़ि इमारत का हक़दार और योग्य था और मेरे महबूब लोगों में से था इसी तरह उसामह रज़ि भी अमीर बनने का योग्य है और मेरे महबूब लोगों में से है। इस इरशादे नबवी पर जो इस्लाम की हक़ीक़ी बराबरी पर आधारित था सहाबा की गर्दनें झुक गईं और उन्होंने समझ लिया कि इस्लाम में किसी शख़्स का ग़ुलाम या ग़ुलाम पैदा होना या बज़ाहिर किसी छोटे तबक़े से सम्बन्ध रखना उस की तरक़्क़ी के रास्ता में रोक नहीं हो सकता, (कोई रोक नहीं बन सकता) और वास्तविक स्तर प्रत्येक अवस्था में तक़्वा और व्यक्तगित क़ाबलीयत पर आधारित है।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुल अंबिया लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 683)

फिर इस से बढ़ कर क्या होगा कि आप ने अपनी हक़ीक़ी फूफी की लड़की ज़ैनब पुत्री जहश रज़ि को ज़ैद बिन हारसह रज़ि से ब्याह दिया और अजीब करिश्मा यह है कि सारे क़ुरआन में अगर किसी सहाबी का नाम वर्णन हुआ है तो वो यही ज़ैद बिन हारसह रज़ि हैं।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुल अंबिया लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 398-399)

ग़ुलामों की इस्लामी तरीक़ा पर आज़ादी के बारे में आप एक स्थान पर और लिखते हैं कि इस्लामी तरीक़ पर आज़ाद होने वाले लोगों में एक बहुत बड़ी संख्या ऐसे लोगों की नज़र आती है जो हर किस्म के मैदान में तरक़्क़ी के आला तरीन स्थान पर पहुंचे हैं और जिन्होंने विभिन्न विभागों में मुसलमानों में लीडर होने का सम्मान हासिल किया .... सहाबा रज़ि में ज़ैद बिन हारसह रज़ि एक आज़ाद किए गए ग़ुलाम थे मगर उन्होंने इतनी क़ाबिलीयत पैदा की कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम ने उनकी क़ाबिलीयत की वजह से बहुत सी इस्लामी मुहिमों में उन्हें अमीर-उल-अस्कर (अर्थात पूरे लश्कर का अमीर) निर्धारित फ़रमाया और बड़े बड़े जलील-उल-क़दर सहाबी यहां तक कि ख़ालिद बिन वलीद रज़ि जैसे कामयाब जरनैल भी उनके अधीनता में रखे।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुल अंबिया लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 403)

हज़रत ज़ैद जंग बदर, उहद, ख़ंदक़, हुदैबिया, ख़ैबर में आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम के साथ शरीक हुए। हज़रत ज़ैद रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम के माहिर तीर अंदाज़ों में से गिने जाते थे। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम ग़ज़वा मुरय्सी (यह जंग बनू मुस्तलक़ का दूसरा नाम है) जो सीरत अलहलबीह के अनुसार शाबान 5 हिज्री में हुआ था, उस के लिए जाने लगे तो आप ने हज़रत ज़ैद रज़ि को मदीना का अमीर निर्धारित फ़रमाया। हज़रत सलमा बिन अकवा रज़ि बयान करते हैं कि मैंने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम के साथ सात जंगों में शिरकत की और नौ ऐसे सिराया में शामिल हुआ (वे जंगें जिन में आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम लश्करों में शामिल नहीं हुए थे) जिनमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम ने हम पर हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि को अमीर लश्कर निर्धारित किया था। हज़रत आयशा रज़ि से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम ने ज़ैद बिन हारसह रज़ि को जब भी किसी लश्कर के साथ रवाना फ़रमाया तो हर बार इस लश्कर का अमीर ही मुक़र्रर फ़रमाया और हज़रत आयशा कहती हैं कि अगर हज़रत ज़ैद रज़ि बाद में भी ज़िन्दा रहते तो आप उन्हीं को अमीर मुक़र्रर फ़रमाते।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 33 ज़ैद अलहुब बिन हारसह रज़ि प्रकाशन दार अलकुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

(अस्सीरतुल हलबीह जिल्द 2 पृष्ठ 377-378 बाब ग़ज़वा बनी अलमुसतलक़ प्रकाशन दार अल्कुतब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि सीरत ख़ातमुल अंबिया में जंग सफ़वान जिसे जंग बदर औला भी कहते हैं जो जमादी अल-आख़िर 2 हिज्री में हुई। इस के बारे में बयान करते हुए कहते हैं कि जंग उशैरह के बाद अभी आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम को मदीना में तशरीफ़ लाए दस दिन भी नहीं गुज़रे थे कि मक्का के एक रईस कुरज़बिन जबिर फ़हुरी ने क़ुरैश के एक दस्ते के साथ कमाल होशियारी से मदीना की चरागाह पर जो शहर से सिर्फ तीन मील पर थी अचानक हमला किया और मुस्लमानों के ऊंट इत्यादि लूट कर चलता हुआ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम को यह सूचना हुई तो आप फ़ौरन ज़ैद बिन हारसह रज़ि को अपने पीछे अमीर मुक़र्रर कर के और मुहाजरीन की एक जमात को साथ लेकर उस के पीछा में निकले और सफ़वान तक जो बदर के पास एक जगह है इस का पीछा किया मगर वह बच कर निकल गया। इस ग़ज़वा को ग़ज़वा बदर औला भी कहते हैं।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुल अंबिया लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 330)

जिसकी पहले वज़ाहत की थी और जो जंग उशैरह है इस के बारे में संक्षिप्त बता दूं कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम को क़ुरैश के बुरे इरादों की ख़बर मिली तो आप यह ख़बर सुनकर मदीना से निकले और समुंद्र के तट के पास उशैरह स्थान तक पहुंचे। यद्यपि क़ुरैश से वहां मुक़ाबला नहीं हुआ लेकिन वहां क़बीला बनू मदलज के साथ कुछ शर्तों पर आपस में अमन का मुआहदा हुआ और इस के बाद आप मदीना तशरीफ़ ले आए। अत: उशैरह समुंद्र के किनारे स्थान था। वहां आप ख़बर सुन कर गए थे कि काफ़िर वहां जमा हो रहे हैं और शायद फ़ौज इकट्ठी हो रही है तो आप ने सोचा कि वहीं बाहर निकल के उनका मुक़ाबला किया जाए लेकिन बहरहाल जंग नहीं हुई और इस सफ़र का यह फ़ायदा हुआ कि एक क़बीले से आप का अमन का मुआहदा हो गया।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुल अंबिया लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 329)

जंग और सिरयह के बारे में भी यह स्पष्ट कर दूं। कुछ को नहीं पता होगा कि ग़ज़वा इसे कहते हैं जिस मुहिम में आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम शामिल हुए और सिरयह इसे कहते हैं जिस में आप शामिल नहीं हुए। ग़ज़वा और सिरयह दोनों में ये भी स्पष्ट हो जाए कि तलवार के जिहाद के लिए निकलना ज़रूरी नहीं है बल्कि हर वे सफ़र जिस में आप सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम जंग की हालत में शरीक हुए हूँ वह ग़ज़वा कहलाता है चाहे वे विशेष रूप से लड़ने के लिए ना भी किया गया हो लेकिन बाद में मजबूरी से जंग करनी पड़ी हो। इसी तरह सिरयह भी है। अत: हर ग़ज़वा और सिरयह लड़ाई की मुहिम का ही नहीं होता। ग़ज़वा उशैर में भी जैसा कि ब्यान हुआ कोई जंग नहीं हुई।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुल अंबिया लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 327)

जब जंग बदर ख़त्म हो गई तो बदर से रवाना होते वक़्त आँ हज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम ने ज़ैद बिन हारस रज़ि को मदीना की तरफ़ रवाना फ़रमाया ताकि वे आगे आगे जा कर मदीना वालों को विजय की ख़ुशख़बरी

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरूल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पहुंचाएं । अत: उन्होंने आप से पहले पहुंच कर मदीना वालों को फ़तह की ख़बर पहुंचाई जिस से मदीना के सहाबा को अगर एक तरफ़ इस्लाम की महान फ़तह होने के लिहाज़ से कमाल दर्जा ख़ुशी हुई तो इस लिहाज़ से किसी क़दर अफ़सोस भी हुआ कि इस महान जिहाद के सवाब से वे ख़ुद महरूम रहे। इस ख़ुशख़बरी ने इस ग़म को भी ग़लत कर दिया जो ज़ैद बिन हारस रज़ि की आमद से थोड़ी देर पहले मदीना के मुसलमानों को प्राय: और हज़रत उसमान रज़ि को विशेष रूप से रुक़य्यह पुत्री रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम की वफ़ात से पहुंचा था जिन को आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम अपने पीछे बीमार छोड़कर जंग बदर के लिए तशरीफ़ ले गए थे और जिनकी वजह से हज़रत उसमान रज़ि भी जंग में शरीक नहीं हो सके ।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुल अंबिया लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 367)

हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि के एक सिरयह जो जमादी अल आख़िर सन 3 हिज्री में करदा के स्थान की तरफ़ भेजा गया था, उस का ज़िक्र करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि

बनू सुलैम और बनू ग़तफ़ान के हमलों से कुछ फ़ुर्सत मिली तो मुस्लमानों को एक और ख़तरा के रोकथाम के लिए के लिए वतन से निकलना पड़ा। अब तक क़ुरैश अपनी उत्तर दिशा की तिजारत के लिए प्राय हिजाज़ के तटयीय रास्ते से शाम की तरफ़ जाते थे लेकिन अब उन्होंने ये रास्ता छोड़ दिया क्योंकि ...इस इलाक़ा के क़बीले मुस्लमानों के हलीफ़ बन चुके थे और क़ुरैश के लिए शरारत का मौक़ा कम था बल्कि ऐसे हालात में वह इस तटयीय रास्ते को ख़ुद अपने लिए ख़तरे का कारण समझते थे। बहरहाल अब उन्होंने इस रास्ते को तर्क करके नज्दी रास्ता धारण कर लिया जो इराक़ को जाता था और जिसके आसपास क़ुरैश के हलीफ़ और मुस्लमानों के जानी दुश्मन थे, पहले रास्ते वे थे जिनसे मुस्लमानों का मुआहदा हुआ था और इस रास्ता पर जिसको क़ुरैश ने धारण किया वहां उनके अपने मुआहदे वाले थे और वे लोग और क़बीले आबाद थे जो मुस्लमानों के भी जानी दुश्मन थे जो क़बीला सुलैम और ग़तफ़ान थे। अत: जमादी अलआख़िर के महीना में आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम को यह सूचना प्राप्त हुई कि क़ुरैश का अमुक का एक तिजारती क़ाफ़िला नज्दी रास्ते से गुज़रने वाला है। ज़ाहिर है कि अगर क़ुरैश के क़ाफ़िलों का तटयीय रास्ते से गुज़रना मुस्लमानों के लिए ख़तरा का कारण था तो नज्दी रास्ते से उनका गुज़रना वैसा ही बल्कि इस से बढ़कर बढ़ कर खतरा वाला था क्योंकि तटयीय रास्ते के ख़िलाफ इस रास्ते पर क़ुरैश के हलीफ़ आबाद थे जो क़ुरैश ही की तरह मुस्लमानों के ख़ून के प्यासे थे और जिन के साथ मिलकर क़ुरैश बड़ी आसानी के साथ मदीना में ख़ुफ़िया छापामारी सकते थे या कोई शरारत कर सकते थे और फिर क़ुरैश को कमज़ोर करने और उन्हें सुलह की तरफ़ माइल करने के उद्देश्य के अधीन भी ज़रूरी था कि इस रास्ते पर भी उनके क़ाफ़िलों की रोकथाम की जाए। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम ने इस ख़बर के मिलते ही अपने आज़ाद किए गए ग़ुलाम ज़ैद बिन हारसह रज़ि की सरदारी में अपने सहाबा का एक दस्ता रवाना फ़र्मा दिया।

क़ुरैश के इस तिजारती क़ाफ़िले में अबू सुफ़यान बिन हरब और सफ़वान बिन उमय्यह जैसे रईस भी मौजूद थे। ज़ैद रज़ि ने निहायत चुस्ती और होश्यारी से अपने फ़र्ज़ को अदा किया और नजद के स्थान करदा में इन इस्लाम के दुश्मनों को जा पकड़ा और इस अचानक हमला से घबरा कर क़ुरैश के लोग क़ाफ़िला के माल और जो भी उनका माल था इस को छोड़ कर भाग गए और ज़ैद बिन हारसह रज़ि और उन के साथी बहुत अधिक माल ग़नीमत के साथ मदीना में कामयाब वापस आए। कुछ इतिहासकारों ने लिखा है कि क़ुरैश के इस क़ाफ़ला का राहबर एक फ़ुरात नामी शख़्स था जो मुस्लमानों के हाथ क़ैद हुआ और मुस्लमान होने पर रिहा कर दिया गया लेकिन दूसरी रिवायतों से पता लगता है कि वह मुस्लमानों के ख़िलाफ़ मुशरिकीन का जासूस था मगर बाद में मुस्लमान हो कर मदीने में हिजरत करके आ गया।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुल अंबिया लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 465-466)

हज़रत आयशा रज़ि बयान करती हैं कि हज़रत ज़ैद बिन हारस रज़ि एक सिरिया से मदीना वापस लौटे। इस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम मेरे घर में थे। हज़रत ज़ैद रज़ि आए और घर का दरवाज़ा खटखटाया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम ने आप का स्वागत किया और उन्हें गले लगाया और उनका चुम्बन लिया।

(सुनन अत्तिर्मज़ी अबवाबुल इस्तेज़ान हदीस 2732)

शाबान 5 हिज्री में जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम ने बनू मुस्तलक़ की तरफ़ रवाना होने की तहरीक फ़रमाई तो कुछ रिवायतों के अनुसार रसूल करीम सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ि को मदीना का अमीर निर्धारित किया।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुल अंबिया लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 558)

जंग ख़ंदक़ के दिन मुहाजरीन का झंडा भी हज़रत ज़ैद बिन हारस रज़ि के पास था।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 2 पृष्ठ 51 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

ये ज़िक्र शायद अभी कुछ चले।

दूसरे अब मैं ज़िक्र करूँगा। ये एक दुख वाली ख़बर है। (जनाज़ा आ गया हुआ है?) अज़ीज़ा मर्यम सलमान ग़ुल जो मुबारक अहमद सिद्दीक़ी साहिब की बेटी थीं 17 जून को 25 साल की उम्र में वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। कुछ दिन पहले ही उनकी बीमारी का पता चला था। तबीयत ज़्यादा ख़राब होने पर हस्पताल दाख़िल कराया गया लेकिन अल्लाह तआला की तक़दीर ग़ालिब आई, बच न सकें। अज़ीज़ा बच्ची के बारे में जो भी उनके मिलने वाले हैं उन्होंने यही कहा है कि बड़ी मिलनसार और अच्छे आचरण की बच्ची थीं। नमाज़ों की बड़ी पाबंद थीं। हमदर्द और ख़िदमत करने वाली थीं। ख़िलाफ़त से बड़ा मुहब्बत का सम्बन्ध था और मरहूमा ने माता पिता और पति के इलावा अपनी यादगार दो बेटियां नायाब और ज़रयाब छोड़ी हैं। नायाब पाँच साल की है और ज़रयाब डेढ़ साल की। लिखने वाले ने लिखा है कि मर्यम सलमान साहिबा की माता गुल मुबारक साहिबा को पिछले छ: हफ़्तों में तीन सदमे देखने पड़े अर्थात गुल मुबारक साहिबा के एक भाई फ़ौत हुए। फिर बहन पिछले महीने मई में हुईं और अब उनकी बेटी अल्लाह ताला को प्यारी हो गईं। ख़ुदा तआला उनको सब्र और हौसला प्रदान फ़रमाए।

मर्यम सलमान साहिबा अपनी जमाअत एप्सम (Epsom) की सैक्रेटरी नौ मबाइयात थीं। बड़े अच्छे आचरण वाली, हँसमुख और ज़रूरत वाले लोगों की बाक़ायदगी से मदद करने वाली थीं। उनके हलक़ा की सदर लजना कहती हैं कि अज़ीज़ा मर्यम सलमान सैक्रेटरी नोमबाइयात के तौर पर बहुत अच्छा और उदाहरणीय काम कर रही थीं और नई अहमदी होने वाली औरतों से ऐसा प्यार का सम्बन्ध क़ायम रखती थीं कि नई अहमदी औरत को जमाअत के निज़ाम से अपने आप मुहब्बत हो जाती थी। एक नई अहमदी औरत फ़रीदा नेल्सन कहती हैं कि मुझे याद है कि जब मैं पहली बार मीटिंग पर गई तो मुझे फ़िक्र थी कि मैं ख़ुद को अलग-थलग महसूस करूँगी लेकिन मुझे देखते ही मर्यम के चेहरे पर एक बड़ी मुस्कुराहट आ गई और मुस्कुराहट लिए मेरी तरफ़ बढ़ी। मुझे गले लगाया और सारा समय मेरे साथ बैठी रही। फिर उस के बाद भी घर मेरे लिए चॉकलेट का तोहफ़ा ले के आई और मुझे जमाअत की और ख़िलाफ़त की बरकतें बताती रही। इसी तरह एक और नई अहमदी ख़ातून नई बैअत करने वाली अंदलीब साहिबा हैं। वह भी कहती हैं कि मेरे ख़्याल में हर सैक्रेटरी नौ मबाईन को मर्यम की तरह होना चाहिए क्योंकि मुझे याद है कि जब मेरी पहली मुलाक़ात मर्यम से हुई तो वह मुझे गले लगा कर इतने प्यार और मुहब्बत से मिली कि मुझे लगा कि मुझे एक

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

प्यार करने वाली बहन मिल गई है। वह मेरे घर में मेरे लिए और मेरे बच्चों के लिए छोटे छोटे तुहफ़े लेकर आती थीं। फ़ोन के माध्यम और मुलाक़ात के माध्यम से हर समय मुझ से सम्पर्क में रहती थीं। दोस्तों और लोगों में बातों बातों में अक्सर ख़िलाफ़त की बरकतों और निज़ाम जमाअत के बारे में बताती रहती थीं। नौ मुबाइअआत की बेहतरीन दोस्त बनती थीं। उनकी मदद करती थीं जिससे जमाअत के प्रोग्रामों में जाने का शौक़ पड़ गया और अब ये नोमबाइअह कहती हैं कि इस बच्ची की तर्बीयत की वजह से, अब में इस क्षेत्र की जनरल सैक्रेटरी बन चुकी हूँ और अपने मामूली जेब ख़र्च से बचत कर के वह ख़िदमत ख़लक़ भी करती थी।

अज़ीज़ा मर्यम के पिता मुबारक सिद्दीक़ी साहिब लिखते हैं। बड़ी बाक़ायदगी से ख़ुत्बों को सुनती थी। हर काम में धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देती थी। वफ़ात से एक दो दिन पहले मजलिस शूरा थी और मर्यम आई सी यू में थी और मैंने इस से कहा कि मैं लिख कर शूरा ना अटनड (attend) करने की इजाज़त ले लेता हूँ लेकिन मर्यम कहने लगी कि नहीं। आप मेरी फ़िक्र ना करें और मेरी वजह से जमाअत का प्रोग्राम नहीं छोड़ना और शूरा में शामिल हूँ क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से हम ने यही वादा किया हुआ है कि धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम रखना है। अंग्रेज़ी नज़्में भी लिखती थी और एक अंग्रेज़ी नज़्म का सार कुछ यह है कि जब भी तुम नेकी का कोई काम करना शुरू करोगे तो तुम्हें बहुत मुश्किलें आयेंगी और लोग तुम्हारे ख़ुलूस पर शक करेंगे। लोगों को अपना काम करने दो और तुम अपना नेकी का काम करते जाओ। इसी तरह उन्होंने ख़िलाफ़त पर एक नज़्म उर्दू में भी लिखी थी।

सेंट जार्जज़ (St. Georges) हस्पताल लंदन में जहां दाख़िल थीं वहां उनकी जो नर्स थी वह एक जर्मन औरत थी। वह कहती है कि मर्यम से बातें कर के मुझे लगता था कि मैं किसी फ़रिश्ते से मिल रही हूँ। गर्मियों में जब यहां ज़्यादा गर्मी होती थी तो अपने फ़्रीज में पानी की बोतलें रख देतीं। फिर छुट्टी वाले दिन बच्चियों के साथ बाहर बैठ के लोगों को पानी पिलाने के लिए ऊपर लिख देती थीं कि बग़ैर किसी क़ीमत के मुफ़्त पानी है और अंग्रेज़ बहुत सारे आते थे और स्टॉल देखकर रुक जाते थे, चीज़ें लेते थे। एक अंग्रेज़ औरत का उन्होंने लिखा है कि उन्होंने मर्यम से पूछा कि यह ख़्याल तुम्हें कैसे आया कि घर के बाहर तुम मेज़ पर ये चीज़ें पानी और चॉकलेट इत्यादि रख के ऊपर लिख देती हो कि मुफ़्त है ,ले जाओ। कहने लगी कि बच्चों को स्कूल से एक हफ़्ता छुट्टियां हैं और मैंने बच्चों की तफ़रीह के लिए सारा हफ़्ता ऐसा ही स्टॉल लगाना है। वह अंग्रेज़ कहने लगी कि मैं तफ़रीह और सुकून के लिए बच्चों पर हज़ारों पाऊंड ख़र्च कर के दौर दराज़ ले के जाती हूँ और मुझे सुकून नहीं मिलता। मुझे ज्ञान नहीं था कि असल ख़ुशी इस तरह घर बैठे हासिल हो सकती है कि लोगों की ख़िदमत जाए।

हमेशा सलाम करने और दूसरों का हाल पूछने में पहल करती थीं और अगर किसी परिचत से या अपने मुहल्ले के लोगों से कुछ दिन बात ना होती तो मैसिज कर के हाल पूछतीं। एक यह भी ख़ूबी थी कि हमेशा दूसरों में अच्छी बातें तलाश करती थीं और फिर इन अच्छी बातों को appreciate करती थीं। हमेशा उस के चेहरे पर मुस्कुराहट होती थी। अल्लाह तआला पर बहुत भरोसा करने वाली और अल्लाह तआला की नेअमतों का बहुत शुक्र करने वाली बच्ची थी। अल्लाह ताला इस पर रहम फ़रमाए और मग़फ़िरत का व्यवहार फ़रमाए और जिस तरह इस बच्ची ने अपने ख़ुदा से उम्मीद रखी थी अल्लाह तआला इस से बढ़कर इस से अपने प्यार का सुलूक फ़रमाए और अपने प्यार की आग़ोश में ले-ले। इस के स्तर बुलंद फ़रमाता रहे और इस की बच्चियों को भी हमेशा अपनी हिफ़ाज़त और पनाह में रखे और सारी वे दुआएं जो उसने अपनी बच्चियों के लिए की हैं उन्हें अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाए। इस के माता पिता को भी सब्र और हौसला प्रदान फ़रमाए वे भी अल्लाह ताला की इच्छा पर सच्चे दिल से राज़ी हों और इस की बच्चियों की मिसाली रंग में परवरिश करने वाले हों और उनकी मदद करने वाले हों। उनके पति को भी बच्चियों को माँ और बाप दोनों का प्यार देने वाला बनाए। अल्लाह तआला स्तर बुलंद फ़रमाता रहे।

अभी जुम्अ: के बाद इंशा अल्लाह अज़ीज़ा मरहूमा बच्ची का नमाज़ जनाज़ा पढ़ाऊंगा सब इस में शामिल हूँ। जनाज़ा मैं बाहर जा कर पढ़ाऊंगा और आप लोग जो अंदर हैं वे यहीं अंदर रहेंगे

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 31 मई 2019 ई पृष्ठ 5-10)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

किया कि अगर शादी में मियां बीवी में कई बार असहयोग पैदा जाएं तो उनको कैसे दूर किया जाए तो इस पर हुज़ूर अनवर ने नसीहत करते हुए फ़रमाया कि मियां बीवी एक दूसरे की अच्छाईयों पर नज़र रखें और कमज़ोरियों से नज़र हटा लेनी चाहिए तो असहयोग पैदा ही नहीं होते।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम नौ बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैतुल आफ़ियत में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

19 अक्तूबर 2018 ई (दिनांक जुमा)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 15 मिनट पर मस्जिद बैतुल आफ़ियत (फ़िलाडलफ़िया) में तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ फ़ज्र की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे। आज जुम्अ: का मुबारक का दिन था। आज का यह दिन इस लिहाज़ से भी एक तारीख़ी दिन है कि अमरीका के इलाक़ा फ़िलोडलफ़िया की ज़मीन से ख़लीफतुल मसीह का यह पहला ऐसा ख़ुत्बा जुमा है जो MTA इंटरनेशनल के द्वारा सारी दुनिया में Live प्रसारित हुआ। इस से पहले अमरीका के पूर्वी हिस्सा वाशिंगटन DC, Harrisburg और पश्चिमी इलाक़ा लास एंजलीज़ से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के ख़ुत्बात जुमा MTAपर सीधे प्रसारित हो चुके हैं।

मस्जिद बैयतुल आफ़ियत का उद्घाटन

नमाज़ जुमा में जमाअत फ़िलाडलफ़िया के अतिरिक्त अमरीका की दूसरी विभिन्न जमाअतों से जमाअत के लोगों बड़े लंबे और लम्बा सफ़र तय करके शामिल हुए। शामिल होने वालों में एक संख्या ऐसी भी थी जो तीन से साढ़े तीन हज़ार मील का सफ़र तय करके आई थी। नमाज़ जुमा में शामिल होने वालों की संख्या चार हज़ार सात सौ से अधिक थी। आज का दिन जमाअत अहमदिया अमरीका की तारीख़ में इस लिहाज़ से भी बहुत महत्तव का दिन था कि फ़िलाडोलफ़िया की इस ज़मीन से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का ख़ुत्बा जुमा सारी दुनिया में Live प्रसारित हो रहा था और यहां की पहली मस्जिद बैतुल आफ़ियत का उद्घाटन हो रहा था जहां से अमरीका में फरवरी 1920 ई में अहमदियत का आरम्भ हुआ था। जब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के आदेश पर हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब अमरीका के पहले मुबल्लिग़ के तौर पर 15 फरवरी 1920 ई को फ़िलाडलफ़िया के तट पर उतरे थे तो उस वक़्त की हुकूमत ने आपको क़ैद कर दिया था। इस वक़्त आपको क़ैद किए जाने पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने फ़रमाया था।

अमरीका हमें हरगिज़ शिकस्त नहीं दे सकता क्योंकि ख़ुदा हमारे साथ है। अमरीका में एक दिन ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह की आवाज़ गूँजेगी और ज़रूर गूँजेगी।

आज हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के ख़ुत्बा जुमा के द्वारा इस ज़मीन से ला इलाहा इल्ला इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह अल्लाह की अवाज़ ना सिर्फ सारे अमरीका में एक वक़्त में गूँजी बल्कि इस ज़मीन से ला इलाहा इल्लल्लाह की आवाज़ सारे संसार में गूँजी जहां से इस आवाज़ को रोका गया था। अल्हम्दुलिल्ला अला ज़ालिक।

प्रोग्राम के अनुसार 1 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद बैतुल आफ़ियत तशरीफ़ लाए और ख़ुत्बा जुमा इरशाद फ़रमाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ काया ख़ुतबा जुमा 1 नवंबर 2018 ई के प्रकाशित हो चुका है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़ुत्बा जुमा 1 बजकर 50 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ जुमा के साथ नमाज़ अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद में लज्ना के हाल में तशरीफ़ ले गए जहां औरत ने दर्शन का सौभाग्य पाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला मस्जिद के बाहरी सेहन में औरत की मार्कीज़ में भी तशरीफ़ लाए। संख्या ज़्यादा होने के कारण औरतों के लिए अलग मार्कीज़ भी लगाई गई थीं। हुज़ूर अनवर ने सारी औरतों को अस्सलामो अलैकुम कहा। यहां भी औरतें हुज़ूर अनवर की ज़यारत से फ़ैज़याब हुईं। इस के बाद हुज़ूर अनवर दया करते हुए औरतों के खाना खाने वाली मार्की मैं तशरीफ़ ले गए और प्रबन्ध का निरीक्षण फ़रमाया। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

फ़िलाडलफ़िया के मेयर और कांग्रेस मैन की मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार पाँच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़

अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए जहां फ़िलाडलफ़िया शहर के मेयर James Kenney साहिब और कांग्रस मैन Hon. Dwight Evans साहिब ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मेयर ने मस्जिद की तामीर पर मुबारकबाद दी और कहा कि बड़ी ख़ूबसूरत मस्जिद बनी है। हम इस बात पर यक़ीन रखते हैं कि समाज में हमें मिल-जुल कर इकट्ठा रहना चाहिए और एक दूसरे के साथ भाईचारा दिखाना चाहिए। हुज़ूर अनवर ने मेयर का शुक्रिया अदा किया और पूछा कि आपके काम करने का सिस्टम किया है और मेयर कितने समय के लिए च्यन होता है। इस पर मेयर ने निवेदन किया कि उनके अधीन 17 कौंसिलरज़ हैं जो अपने अपने क्षेत्र में काम करते हैं और मेयर दो टर्म के लिए चुना जा सकता है। एक टर्म चार साल की होती है। पहली टर्म 2021 ई में ख़त्म होगी।

मेयर ने निवेदन किया कि मैंने सुना है कि आप ग्वेटामाला में अपना हस्पताल खोल रहे हैं। यह बड़ी अच्छी बात है। इस तरह आप इन्सानियत की ख़िदमत करते हैं।

कांग्रस मैन Dwight Evans साहिब ने निवेदन किया कि मुझे यहां आकर बहुत ख़ुशी हुई है और आज आप से मुलाक़ात और आपके प्रोग्राम में शामिल होना मेरे लिए सम्मान की बात है। महोदय ने कहा कि मैं हुकूमत के एग्रीकल्चर के बारे में कमेटी का मेम्बर हूँ। खेती का बहुत महत्व है। हर कोई खाना पीना पसंद करता है और इस की हमेशा बहुत ज़रूरत रहती है। हुज़ूर अनवर ने खेती के बारे में से विभिन्न उमूर पर बातचीत फ़रमाई। इसी तरह समुंद्र के द्वारा ट्रेड के बारे में से पूछा कि किस तरह होती है। पोर्ट बिज़नस कैसा है। इस पर कांग्रस मैन ने निवेदन किया कि हमारा यहां का ट्रेड न्यूयार्क की तुलनामें छोटा है। हमारी विशेषता यह है कि हम आने वाले जहाज़ों को जल्दी फ़ारिग़ कर देते हैं।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर महोदय ने निवेदन किया कि फ़िलाडलफ़िया से कांग्रस में दो कांग्रस मैन की नुमाइंदगी होती है। यह मुलाक़ात 5 बजकर 15 मिनट तक जारी रही।

प्रैस कान्फ़्रैंस

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार प्रैस कान्फ़्रैंस हुई जिसमें इलैक्ट्रॉनिक, प्रिंट और सोशल मीडिया के निम्नलिखित पत्रकार पत्रकार और प्रतिनिधि शामिल हुए।

* (RNS) Religious News Service यह संस्था 1934 ई से क़ायम है, उनके एक सीनीयर पत्रकार और संस्था की सोशल मीडिया की मैनेजर ने प्रैस कान्फ़्रैंस में शिरकत की *TV न्यूज़ चैनल्ज़ CBS 3 Philadelphia के मारूफ़ रिपोर्टर ने शिरकत की *Metro US Philadelphia, फ़िलोडलफ़िया का यह चौथा बड़ा अख़बार है, इस अख़बार के न्यूज़ ऐडीटर और सीनीयर पत्रकार ने शिरकत की * State Broadcast News (यह संस्था आडीयो, वीडीयो और तस्वीरी सहाफ़त के लिए मवाद तैयार करता है और दूसरी संस्था इस मवाद को लेकर आगे प्रयोग करते हैं) इस संस्था के फ़िलोडलफ़िया और न्यूजर्सी के इलाक़ा के ऐडीटर ने शिरकत की * Philadelphia Daily News,यह अख़बार फ़िलोडलफ़िया के बड़े अख़बारों में दूसरे नंबर पर है,इस के कालम लिखने वाले ने शिरकत की * Philadelphia Tribune ,यह अख़बार अमरीका में प्रकाशित होने वाला सबसे पुराना अफ्रीकन अमरीकन अख़बार है। इसके प्रतिनिधि ने शिरकत की *Freelance Journalists। दो आज़ाद पेशावर पत्रकार जिनके निबन्ध विभिन्न अख़बारों में प्रकाशित होते हैं, उन्होंने भी इस प्रैस कान्फ़्रैंस में शिरकत की।

*ऐसे मुसलमानों के बारे में एक सवाल के जवाब में कि जो इस्लाम के नाम पर इंतिहापसंदी फैलाते हैं, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने फ़रमाया: जो कुछ भी मैं कहता आया हूँ वह इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार है और इस्लाम शब्द का अर्थ ही अमन है। अत: अगर कोई मुसलमान अपने आपको मुसलमान कहलाते हुए इन शिक्षाओं पर अनुकरण नहीं करता तो यह उस का अपना रवैय्या है और इस का अपना अनुकरण है, इस का इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं है। मैं तो सिर्फ अपने बारे में और अपनी जमाअत के बारे में कह सकता हूँ। जो कुछ हम करते हैं वह ठीक इस्लामी शिक्षा के अनुसार है।

*एक पत्रकार ने सवाल किया : फिर आप लोगों का ऐसे व्यवहार पर क्या व्यवहार है? इस के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: हम इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं को फैलाते हैं। हम किसी को मजबूर नहीं कर सकते। हम सिर्फ अपने कर्मों के ज़िम्मेदार हैं। हम अहमदी मुसलमान हैं। आप लोग हमसे कोई ऐसा व्यवहार नहीं देखेंगे। हम सिर्फ उन्हें समझाने की कोशिश कर सकते हैं अगर वे समझ जाएं। इस्लाम की वास्तविक शिक्षाएं तो सिर्फ मुहब्बत, प्यार और अमन का प्रचार करती हैं।

*एक पत्रकार ने सवाल किया कि आप फ़िलोडलफ़िया के लोगों को इस मस्जिद और इस मस्जिद में आने वालों के बारे में क्या कहना चाहते हैं। इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने फ़रमाया कि मैं मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर इस बारे में विस्तार से बात करूँगा।

*एक पत्रकार ने सवाल किया कि इस इलाक़ा में मस्जिद बनाने का क्या महत्व है? इस सवाल का जवाब देते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने फ़रमाया: जहां कहीं भी हमारी जमाअत क़ायम है, हम वहां मस्जिद बनाने की कोशिश करते हैं। एक मज़हबी जमाअत के लिए इबादत करने की जगह बहुत ज़रूरी है। ख़ुश-क़िस्मती से हमें यहां पर एक अच्छी जगह उपलब्ध हो गई है। अगर हमें डाउन टाउन में भी जगह मिलती तो हम ने वहां बना लेनी थी। हम ने अब यहां फ़िलोडलफ़िया शहर के अंदर मस्जिद बनाई है, इस जगह का चयन करने में कोई ख़ास वजह नहीं है। यहां हमें अच्छी क़ीमत पर अच्छी ज़मीन मिल गई है, इसलिए हमने यहां मस्जिद तामीर करने का चयन किया।

*एक पत्रकार ने सवाल किया कि आप यहां फ़िलोडलफ़िया में पहली बार तशरीफ़ लाए हैं। आपने कोई स्थानीय खाना खाया है? इस के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने मुस्कुराते हुए फ़रमाया :मेरे लोगों ने मुझे इस बारे में बताया ही नहीं कि यहां कोई ख़ास स्थानीय खाना है। उन्हें चाहिए था कि मुझे बताते। अगर आप कोई ख़ास चीज़ पसन्द करते हैं तो मैं कोशिश करूँगा। मुझे विभिन्न खाने चैक करने का शौक़ है।

इस पर सवाल करने वाले ने निवेदन की कि मैं Cheese Steak तजवीज़ करूँगा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने मुस्कुराते हुए फ़रमाया कि ठीक है।

*एक पत्रकार ने सवाल किया कि अहमदिया जमाअत को यहां अमरीका और बाक़ी दुनिया में क्या चैलेंजिज़ सम्मुख हैं ? इस के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने फ़रमाया: आजकल लोग अपने सृष्टा को भुलाते जा रहे हैं। हम एक धार्मिक जमाअत हैं। अहमदिया जमाअत के संस्थापक ने फ़रमाया था कि मैं दो प्रमुख उद्देश्य लेकर आया हूँ। पहला यह कि लोग अपने सृष्टा को पहचानें और दूसरा यह कि लोग एक दूसरों के हुक़ूक़ अदा करने की तरफ़ ध्यान करें। तो यहां अमरीका और बाक़ी दुनिया में हमारे चैलेंजिज़ यही दोनों उद्देश्य हैं।

*सवाल करने वाले ने निवेदन की कि अन्य धर्मों से सम्बन्ध रखने वाले लोगों के लिए आपका क्या पैग़ाम है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने फ़रमाया: यह पैग़ाम है कि हमें इकट्ठे मिलकर रहना चाहिए। मज़हब का मामला इन्सान के दिल के साथ होता है और इस्लाम और कुरआन करीम बड़े स्पष्ट अंदाज़ में कहता है कि धर्म में कोई बलात नहीं है। तो जब अल्लाह तआला ने ख़ुद फ़रमाया है कि धर्म में कोई बलात नहीं तो बतौर इन्सान मिल जुल कर रहना चाहिए और आपसी प्यार, मुहब्बत और भाईचारा को बढ़ाना चाहिए।

* एक औरत पत्रकार ने सवाल किया कि आप अमरीका में अगली कुछ दशकों में अहमदिया मुस्लिम जमाअत की क्या तरक़्क़ी होती देख रहे हैं? इस बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने फ़रमाया कि हम तो हमेशा आशावान रहते हैं। धार्मिक जमाअतों की वृद्धि बहुत धीरे हुआ करती है। जैसा कि मैंने कहा है कि अन्त में हमारा मक़सद यह है कि हम मानव जाति को अपने सृष्टा के हुक़ूक़ और एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने की तरफ़ लेकर जाएं। यह वह पैग़ाम है जो कोई भी अक़्ल रखने वाला रद्द नहीं कर सकता परन्तु इस पैग़ाम को मानने में लोगों के लिए कुछ अन्य रुकावटें हैं। लेकिन ये पैग़ाम बड़े व्यापक पैमाने पर अनुमानों में स्वीकार किया जा चुका है कि इस पैग़ाम को सराहा जा रहा है।

यह प्रैस कान्फ़्रैंस साढ़े पाँच बजे तक जारी रही।

आज मस्जिद बैयतुल आफ़ियत के उद्घाटन के बारे में मस्जिद के मल्टी परपज़ हाल में एक आयोजन का आयोजन किया गया था। इस आयोजन में विभिन्न जमाअतों से आने वाले जमाअत का ओहदेदारान के अतिरिक्त 176 ग़ैरमुस्लिम और ग़ैर अहमदी मेहमानों ने शिरकत की। इन मेहमानों में निम्नलिखित लोग शामिल थे:

फ़िलोडलफ़िया के मेयर Hon. James Kenny सांगरस मैन Hon. Dwight Evans

Mr. Tifaany Chang Lawson (महोदय एशीयन पसीफ़िक अमरीकन अफ़ेयर्ज के गवर्नर Tom Wolf कमीशन के ऐगज़ैक्टिव डायरेक्टर हैं)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

दुआ का इच्छुक

Sohail Ahmad Nasir and famil

jamaat Ahmadiyya idra,Dist: Proliya. West Bengal

Mr. Sharif Street स्टेट सैनेटर्ज़ पेनसलवीनया
Mr. Keven Boyle (मैंबर हाऊस आफ़ रीपरज़नटीटो पेनसलवीनया)
Mr. Al-Taubenberger सिटी कौंसल मैन फ़िलोडलफ़िया
Mrs. Jannie Blackwell सिटी कौंसल वूमैन फ़िलोडलफ़िया
कौंसल मैन Mr. Curtis Jones
कौंसल वूमैन Mrs. Maria Quiones Sanchez
कौंसल मैन Mr. Derek Green
प्रोफ़ेसर Istvan Varkonyi (Phd) महोदय प्रैज़ीडैंट आफ़ टेम्पल यूनीवर्सिटी के प्रतिनिधि के तौर पर आए थे
प्रोफ़ेसर Heidi Grunwald (Phd) Co-Director टेम्पल यूनीवर्सिटी सैंटर फ़ार पब्लिक हैल्थ ला रिसर्च
Mr. Brian Goedde कॉलेज प्रोफ़ैसर, कम्यूनिटी कॉलेज फ़िलोडलफ़िया
Judge Harry Schwartz Pastor Dr. Reverend John L. Payne

इस के अतिरिक्त डाक्टरज़, टीचरज़, वकील, पत्रकार, मीडिया के प्रतिनिधि, थिंक टैंक, सैक्योरिटी के इदारों के प्रतिनिधि और ज़िन्दगी के विभिन्न विभागों से सम्बन्ध रखने वाले मेहमान शामिल थे।

प्रैस कान्फ्रैंस के बाद साढ़े पाँच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ हाल में तशरीफ़ लाए।

मस्जिद बैयतुल आफ़ियत फ़िलोडलफ़िया की उद्घाटन आयोजन

प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो आदरणीय अब्दुल्लाह डिब्बा साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला फ़िलोडलफ़िया ने की और इस के बाद अंग्रेज़ी भाषा में इस का अनुवाद प्रस्तुत किया। इस के बाद आदरणीय अमजद महमूद ख़ान साहिब नैशनल सैक्रेटरी उमूर ख़ारिजा यू एस ए ने अपना परिचयी ऐड्रैस प्रस्तुत किया।

*इसके बाद फ़िलोडलफ़िया शहर के सम्मानीय मेयर जेम्ज़ केनी Hon. James Kenney ने अपना सम्बोधन पेश किया। महोदय ने अपने सम्बोधन का आरम्भ अस्सलामो अलैकुम के साथ किया। महोदय ने कहा: आज शाम इस अहम आयोजन में दावत पर मैं आपका बहुत शुक्रगुज़ार हूँ और अहमदिया मुस्लिम जमाअत की मस्जिद के शानदार उद्घाटन में शामिल होना मेरे लिए गर्व का कारण है। इसी तरह इमाम जमाअत अहमदिया को ख़ुश-आमदीद कहना भी मेरे लिए बहुत आन्नद का कारण है। मैं जमाअत अहमदिया के स्थानीय लोगों का भी शुक्रिया अदा करता हूँ जिनकी मेहनत से मस्जिद की यह ख़ूबसूरत इमारत बनी है। मुझे बड़ी ख़ुशी होती है कि यहां के स्थानीय अहमदी फ़िलोडलफ़िया को अपना घर समझते हैं। और मुझे बड़ी ख़ुशी है कि अब आप के पास एक ख़ूबसूरत जगह है जहां आप लोग अपनी इबादत कर सकते हैं। फ़िलोडलफ़िया शहर की तारीख़ से पता चलता है कि मज़हबी आज़ादी इस शहर के बुनियादी उसूलों में शामिल है। ये शहर इसी बुनियाद पर बनाया किया गया था कि हमारा सम्बन्ध बेशक विभिन्न क़ौमों और नस्लों से हो लेकिन यह शहर प्रत्येक को ख़ुश-आमदीद कहेगा।

मेयर ने अपने सम्बोधन में कहा: जैसा कि आपको ज्ञान है कि फ़िलाडलफ़िया में बहुत से धर्मों के लोग अपनी अपनी आस्थाओं पर अनुकरण करते हैं इस लिए यह मस्जिद हमारे समाज को जिसमें विभिन्न किस्म के लोग रहते हैं और अधिक मबजूत करेगी। इस मस्जिद का उद्घाटन हमारी यकजहती और एकता की निशानी है। मुसलमान अमरीकी सभ्यता का एक बहुत अहम हिस्सा हैं। इस वक़्त हमारे देश के जो हालात हैं उनके समक्ष मैं आपको बताना चाहता हूँ कि फ़िलाडलफ़िया शहर में सारे मुसलमान इज़्ज़त तथा सम्मान के योग्य हैं और वे यहां महफ़ूज़ हैं।

मेयर ने कहा: मेरे ख़्याल में ये मस्जिद ख़ुदा तआला ने ख़ुद यहां बनवाई है। हमें जिन समस्याओं का सामना है उन्हें सकारात्मक लोगों और सकारात्मक रोल मॉडलज़ के द्वारा हल किया जा सकता है जो हमारे बच्चों की सही रास्ता की तरफ़ रहनुमाई कर सकते हैं। अगर एक दूसरे के साथ मिल-जुल कर काम करें, एक दूसरे के साथ इज़्ज़त और सम्मान के साथ पेश आएं और दुनिया को ये दिखाएं कि हम सब एक साथ मिल कर रह सकते हैं, तो हम अपनी समस्याओं का ख़ात्मा कर सकते हैं, हम अपने बच्चों की शिक्षा की समस्याओं का ख़ात्मा कर सकते हैं।

अपने सम्बोधन के आख़िर पर मेयर ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की ख़िदमत में फ़िलाडलफ़िया शहर की चाबी पेश की।

*इस के बाद सम्मानीय Dwight Evans मैंबर आफ़ यू एस ए कांग्रेस ने अपना सम्बोधन पेश किया। ये पेनसलवीनया के सैकण्ड डिस्ट्रिक्ट में ख़िदमत कर रहै हैं। जहां मस्जिद बैतुल आफ़ियत समेत फ़िलाडलफ़िया के विभिन्न क्षेत्र आते हैं। यह 2016 ई में चुने गए और कांग्रेशनल ब्लैक कॉक्स का भी हिस्सा हैं। अपनी तक़रीर में उन्होंने कहा: यह मेरे लिए सम्मान की बात है कि यहां आज हुज़ूर अनवर का फ़िलाडलफ़िया के महान शहर में स्वागत कर रहा हूँ। यह शहर जो बहन भाइयों जैसी मुहब्बत का शहर है। फ़िलाडलफ़िया की इंतिज़ामीया की तरफ़ से में एक मुसलमान कम्यूनिटी को कहना चाहता हूँ कि हम आप लोगों के अमन के पैग़ाम को यहां ख़ुश-आमदीद कहते हैं। कुछ अमरीकियों की तरफ से हाल के सालों में इस्लाम के ख़िलाफ़ कुछ विचार सामने आए हैं। लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूँ कि यहां की अक्सरीयत आप को ख़ुश-आमदीद कहती है। हम आप लोगों के साथ नफ़रत, द्वेष और कट्टरता के ख़िलाफ़ खड़े हैं। जैसा कि मार्टर लूथर किंग ने कहा था कि किसी भी जगह नाइंसाफ़ी होना हर जगह इन्साफ़ के लिए एक ख़तरा है।

महोदय ने कहा: मैं ना सिर्फ आपके अमन के पैग़ाम को क़दर की निगाह से देखता हूँ बल्कि यह भी कि आप लोग सिर्फ बातें नहीं करते बल्कि जो कहते हैं इस पर अमल भी करते हैं। जैसा कि annual blood drive का प्रोग्राम है और आप लोगों की देश से वफ़ादारी और अमन के लिए कोशिशें हैं। मैं इन कामों की वजह से आपको मुबारकबाद पेश करता हूँ। मैं मेयर की मौजूदगी में इस बात का प्रकट करता हूँ कि हम आप लोगों के साथ खड़े हैं। आप इन कामों में अकेले नहीं हैं। आख़िर पर मैं हुज़ूर अनवर को एक बार फिर फ़िलाडलफ़िया के इस महान शहर में ख़ुश-आमदीद कहता हूँ।

*गवर्नर आफ़ पनसलवीनया ने अपना पैग़ाम रिकार्ड करवा कर इसी तरह लिख कर भी भिजवाया था और एफी लासन और जूलिया पार्कर को नुमाइंदा के रूप में भिजवाया। उन्होंने यह पैग़ाम पढ़ कर सुनाया। महोदया ने पैग़ाम पढ़ने से पहले निवेदन किया: अस्सलामो अलैकुम। मैं हुज़ूर अनवर को इस महान शहर में जो brotherly love and sisterly affection की वजह से मशहूर है, स्वागत कहती हूँ। मैं यहां गवर्नर का पैग़ाम पढ़ कर सुनाऊँगी और इस से पहले मैं अहमदिया जमाअत का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ कि आपने इस मस्जिद के लिए पनसलवीनया फ़िलाडलफ़िया का चयन किया और इसके अतिरिक्त आप हर साल अपना जलसा सालाना Harrisburg में आयोजित करते हैं। शुक्रिया।

*इसके बाद एफी लासन ने गवर्नर का निम्नलिखित पैग़ाम पढ़ कर सुनाया:अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी यू एस ए के इस प्रोग्राम में शामिल होने की दावत मेरे लिए बड़े सम्मान की बात है। मैं आपको मस्जिद बैतुल आफ़ियत फ़िलाडलफ़िया के उद्घाटन के अवसर पर मुबारकबाद पेश करता हूँ। अहमदिया मुस्लिम जमाअत की एकता और मज़बूती इस बात की निशानी है कि आपके सरबराह सम्मानीय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस एक विश्वव्यापि रहनुमा हैं। यह मेरे लिए सम्मान की बात है कि कॉमनवेल्थ आफ़ पनस्लवीनया में पहली नियमित तामीर की जाने वाली मस्जिद के उद्घाटन के लिए आने पर हुज़ूर अनवर को ख़ुश आमदीद कह रहा हूँ। अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी की लीडरशिप की तरफ से विश्वव्यापी इन्सानी हुक़ूक़ के बढ़ावा और मज़हबी अक़ल्लीयतों की सुरक्षा और औरत को बाधारण बनाने और उन्हें शिक्षा देने जैसे कार्य ऐसे हैं कि जिन्हें हम अपनी कॉमनवेल्थ में बहुत सम्मान की निगाह से देखते हैं।

*इसके बाद जूलिया पारकर ने पैग़ाम पढ़ते हुए कहा:मैं हुज़ूर अनवर और सारी अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी को इस्लामी शिक्षाओं से लगाओ और अमन तथा बर्दाश्त का पैग़ाम फैलाने पर मुबारक बाद पेश करता हूँ। फ़िलाडलफ़िया में इस नई मस्जिद के आसपास कम्यूनिटी के लोगों के ज़िन्दगी के स्तर बढ़ाने के लिए आपके इक़दाम बहुत प्रभावित करने वाले हैं। मुझे यक़ीन है कि अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी की लीडरशिप की निगरानी में बनाई जाने वाली यह मस्जिद सारी कॉमनवेल्थ में उम्मीद,अमन और इत्तिहाद की किरण साबित होगी।

गवर्नर की तरफ़ से और कॉमनवेल्थ आफ़ पनस्लवीनया की सारी जनता की तरफ़ से मैं मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस को ख़ुश-आमदीद कहता हूँ और हमारे कॉमनवेल्थ में अमन, इत्तिहाद और इन्सानियत के उसूलों के बढ़ावा के लिए अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी और आयोजन में शामिल लोगों का शुक्रिया अदा करता हूँ। इस यादगार अवसर पर मेरी तरफ़ से नेक इच्छाात क़बूल फ़रमाएं।(गवर्नर Tom Wolf)

इस के बाद आदरणीय अमीर साहिब यू एस ए साहिबज़ादा मिर्ज़ा मग़फ़ूर अहमद साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का संक्षिप्त परिचय करवाया। इसके बाद 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अंग्रेज़ी ज़बान में मेहमानों से ख़िताब फ़रमाया। (हुज़ूर अनवर के ख़िताब का उर्दू अनुवाद पेश किया जा रहा है)

ख़िताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशह्हुद, ताव्वुज़ और तसमीया के साथ अपने ख़िताब का आरम्भ फ़रमाया। इस के बाद फ़रमाया:सारी सम्मान्नीय मेहमानान ! अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्ला व बरकातुहो। आप सब पर अल्लाह तआला की तरफ़ से सलामती, रहमतें और बरकतें नाज़िल हों। सबसे पहले तो मैं अपने सारे मेहमानों का शुक्रिया अदा करना चाहूँगा जिन्होंने दया करते हुए हमारी

दावत क़बूल की और हमारे साथ इस अहम और आनन्द वाले आयोजन में शामिल हुए जिसके द्वारा हम इस शहर में अपनी मस्जिद का उद्घाटन कर रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने फ़रमाया: यह ज़िन्दगी की एक हक़ीक़त है कि मानव जाति एक ऐसी सृष्टि है जिसकी बक़ा एक दूसरे के साथ समाजी और आपसी सम्बन्ध स्थापित किए बिना मुम्किन नहीं है। रंग तथा नस्ल और तमद्दनी मज़हबी अन्तर को छोड़ते हुए हम बहैसीयत इन्सान मुत्तहिद हैं। इस लिए यह बात बहुत महत्तव रखती है कि हम अपने आपको दूसरों से अलग रखने या सिर्फ अपनी ही कम्यूनिटी के लोगों से सम्बन्ध रखने की बजाय दूसरों के साथ बातचीत करें। डायलॉग हरलिहाज़ से बहुत महत्तव की बात है। रुकावटों को दूर करने के लिए , एक दूसरे को समझने और जानने के लिए, समाज के उन्नति और तरक़्क़ी के लिए और अमन और भाईचारा की फ़िज़ा पैदा करने के लिए लोगों और विभिन्न कम्यूनिटीज़ के मध्य बाइज़्ज़त तरीक़ पर बातचीत करना बहुत अहम है। इस लिए मैं आप सब का बहुत सम्मान करता हूँ कि आप लोग अपनी व्यस्त ज़िन्दगी में से वक़्त निकाल कर आज यहां आए। आप मैं से अक्सर ने मुसलमान ना होने के बावजूद हमारी दावत क़बूल की और विशेष रूप से एक मज़हबी आयोजन जिसके द्वारा एक मस्जिद का उद्घाटन किया जा रहा है इस में शामिल हुए । इस लिए में आप लोगों के अंदर एक दूसरे के लिए पाई जाने वाली बर्दाश्त और सम्मान के उच्च स्तरों की प्रशंसा किए बिना आगे नहीं जा सकता।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने फ़रमाया: जहां आपके इस आयोजन में शामिल होना ज़ाहिर करती है कि आप लोग हमारी जमाअत के साथ सम्बन्ध मज़बूत करने के इच्छुक हैं वहां यह भी ज़ाहिर होता है कि आप लोग हमारे मज़हब को बेहतर तौर पर जानना चाहते हैं। इस से पता लगता है कि आप वे लोग हैं जो इधर उधर की सुनी सुनाई बातों पर अंधा यक़ीन नहीं करना चाहते। आजकल के अफ़्वाहों के दौर में आप लोगों की इस्लाम के बारे में सच्चाई जानने की इच्छा प्रशंसा योग्य है। मीडिया जो मुसलमानों के बारे मैं कहता है या कुछ इस्लाम विरोधी क़ुव्वतें जिस तरह इस्लाम की तस्वीर दुनिया के सामने पेश करती हैं उसे उसी रूप में मानने की बजाय आप लोग ख़ुद यहां देखने आए हैं कि इस्लाम का असल अर्थ क्या है और इस्लाम क्या शिक्षाएं पेश करता है, इस लिए मैं आपको शुभ कामनाएं पेश करता हूँ और आप लोगों का शुक्रिया अदा करता हूँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने फ़रमाया: आप सब जमाअत अहमदिया के माटो या नारा मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं से अच्छी तरह वाक़िफ़ होंगे। यह माटो कोई नई चीज़ नहीं है या यह हमारी कोई नई ईजाद नहीं है बल्कि इस नारा की बुनियाद इस्लाम की पवित्र किताब क़ुरआन करीम की शिक्षाएं हैं और वे शिक्षाएं हैं जो इस्लाम के संस्थापक रसूल करीम ने हमें दें। आरम्भ से ही इस्लाम ने हमें यह सिखाया है कि आपसी इज़्ज़त तथा सम्मान और आपसी बर्दाश्त बुनियादी इन्सानी इक़दार हैं। उदाहरण के तौर पर क़ुरआन करीम की सूरत अल-अनाम की आयत 109 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मुसलमान ग़ैर मज़हबी लोगों के बुतों को बुरा-भला ना कहीं क्योंकि उस की प्रतिक्रिया में वे भी अल्लाह तआला को बुरा भला कहींगे। अत: इस बात की यक़ीन दहानी के लिए कि आपस में मौजूद तनाव को हवा ना दी जाए और समाज को नफ़रत और नफरत से बचाने के लिए मुसलमानों को हुक्म दिया गया है कि वे हमेशा हौसला और बर्दाश्त को प्रकट करें। अत: यह जो अक्सर एतराज़ किया जाता है कि मुसलमान दूसरे धर्मों और मज़हबी शख़्सियात का सम्मान नहीं करते उस का हक़ीक़त से कोई सम्बन्ध नहीं है। दरअसल क़ुरआन करीम की शिक्षाओं के आधार पर मुसलमान यह यक़ीन रखते हैं कि अल्लाह तआला के अनबिया को दुनिया की सारी क़ौमों की तरफ़ उनकी हिदायत और इस्लाह के उद्देश्य से भेजा गया था। हमारा सारे नबियों की सच्चाई पर दृढ़ ईमान है और हम यक़ीन रखते हैं कि सारे नबी मानव जाति को ख़ुदा तआला की तरफ़ बुलाने के लिए और आचरण सिखाने के लिए और आज़ादी ज़मीर , न्याय तथा इन्साफ़ और इन्सानी हमदर्दी जैसी विश्वव्यापी आचरणों को स्थापित करने के लिए भेजे गए थे। अत: इन बातों के सम्मुख रखते हुए हमारे लिए ये कैसे मुम्किन है कि हम अन्य धर्मों के अनुयायियों का सम्मान ना करें। इस लिए हम अहमदी मुसलमान अपने इस दावा में मुख़लिस हैं कि हम किसी से नफ़रत नहीं करते।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने फ़रमाया: फिर मज़ीद यह कि हम सारी मानव जाति से वास्तविक मुहब्बत करते हैं और दूसरों की तरफ़ दोस्ती का हाथ बढ़ाने के लिए हर समय तय्यार रहते हैं। उदाहरण के तौर पर पिछले साल यहां फ़िलाडलफ़िया में एक स्थानीय यहूदी क़ब्रिस्तान पर जब हमला किया गया और उन की क़ब्रों का अपमान किया गया तो इस नफ़रत योग्य हरकत के बाद जमाअत अहमदिया के स्थानीय लोग फ़ौरी तौर पर यहूदी कम्यूनिटी की मदद के लिए पहुंचे और यहूदी कम्यूनिटी के साथ भाईचारा का इज़्हार किया। इन चीज़ों के बदला में हमें किसी इनाम या शुक्रिया की ज़रूरत नहीं होती क्योंकि हम तो सिर्फ उन्ही शिक्षाओं की पैरवी कर रहे होते हैं जो हमारे मज़हब ने हमें सिखाई हैं और ये शिक्षाए यही हैं कि जब अन्य धर्मों या अक़ीदा के लोग मुश्किलें में पीड़ित हों तो उनके साथ कंधे के साथ कंदा मिला कर खड़ा हुआ जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हम सारी मानव जाति के हुक़ूक़ की पूर्ण ज़मानत देते हैं ताकि वे बिना किसी द्वेष और भेदभाव के सुलूक के अपनी ज़िन्दगीयां गुज़ार सकें।जो भी बिना किसी द्वेष के और पूर्ण ईमानदारी से इस्लामी इतिहास का अध्यनन करे वे देखेगा कि मज़हबी आज़ादी हमेशा इस्लाम का बुनियादी उसूल रही है।

वास्तव में अरब के शहर मदीना में, जहां रसूल करीम ने मक्का में सालों साल मज़ालिम का सामना करने के बाद अपने अनुयायियों के साथ हिजरत की , जो हुकूमत बनाई गई इस में इस किस्म के pluralism और खुले दिल का व्यवहारिक प्रकटन देखने को मिला। इस्लाम के पैग़ंबर ने अन्य धर्मों के रहनुमाओं और कम्यूनिटीज़ के साथ एक मुआहिदा तय किया जो एक ऐसे शहर में हुकूमत की बुनियाद बना जहां विभिन्न क़ौमें आबाद थीं। इस मुआहिदा ने इस बात की ज़मानत दी कि समाज के सारी लोगों बिना किसी ज़ुलम के अमन के साथ रह पाएँगे और उन्हें अपने अपने धर्मों और आस्थाओं पर अनुकरण करने की पूर्ण आज़ादी प्राप्त होगी। मज़ीद यह कि इस दौर के रस्म तथा रिवाज के अनुसार हर कम्यूनिटी अपने अपने मज़हबी या क़बाइली क़ानून पर अनुकरण करने की पाबंद थी। अत: मुसलमान इस्लामी शरीयत पर अनुकरण करते थे और यहूदी तौरात के क़ानून के पाबंद थे और बाक़ी कम्यूनिटीज़ अपने अपने अक़ाइद और रस्मो-रिवाज की पाबंद थीं। इस वक़्त सारी लोग मज़हब तथा मिल्लत से हट कर अमन की स्थापना और दूसरों का सम्मान करने के ज़िम्मावार थे। इस मुआहिदा ने अमन को बढ़ावा दिया और इस बात को यक़ीनी बनाया कि धैर्य और सब्र से समाज स्थापित हो। अत: चौदह सौ साल पहले मदीना के अंदर एक से अधिक और विभिन्न सभ्यताओं पर आधारित समाज पर आधारित एक कामयाब हुकूमत चलाई गई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: में यह परामर्श नहीं दे रहा कि आज समाज में रहने वाले विभिन्न लोगों या क़ौमों की सतह पर प्रचिलत बेशुमार क़ानूनों को एक साथ कर दिया जाए। बल्कि मेरा प्वाईंट सिर्फ इतना है कि हमारी प्रथम तर्जीह यह होनी चाहिए कि विश्वव्यापी इन्सानी इक़दार को स्थापित करते हुए और न्याय तथा इन्साफ और अख़लाक़ीयात को बढ़ावा देते हुए समाज में अमन की स्थापना हो। इस को और अधिक स्पष्ट करने के लिए क़ुरआन करीम और रसूल करीम ने बड़े स्पष्ट रंग में बयान फ़रमाया है कि मज़हबी मामलों में किसी किस्म का कोई जबर तथा ज़ोर नहीं। प्रत्येक को इस बात का हक़ प्राप्त है कि वे अपनी इच्छा से जो चाहे रास्ता धारण करे और मज़हब प्रत्येक के दिल तथा दिमाग का मामला है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसी तरह इस्लाम शिक्षा देता है कि मज़हब तथा आस्था के मतभेद के बावजूद हर शहरी का फ़र्ज़ है कि वह अमन वाला रहे और इस बात को यक़ीनी बनाए कि वह किसी ऐसे कार्य का हिस्सा नहीं है जो समाज के अमन को ख़राब करने वाला है। इस्लाम कहता है कि सारे लोग क़ानून के पाबंद हों और रियासत के वफ़ादार शहरी हों और इस की तरक़्क़ी और दृढ़ता में हिस्सा डालने वाले हों।अगर आप में से किसी के ज़हन में इस नई मस्जिद के बारे में से कोई भी चिन्ताएं हों और ये भय रखते हों कि मुसलमान इस मस्जिद को बाक़ी समाज के ख़िलाफ़ किसी ख़ुफ़ीया प्लान और स्कीम का माध्यम बनाएंगे और नफ़रत फैलाने का कारण बनाएंगे तो यक़ीन रखें कि ऐसी कोई भी बेचैनी रखने की ज़रूरत नहीं है। यह यक़ीन रखें कि इस इमारत से सिर्फ मुहब्बत, प्यार और भाईचारा का पैग़ाम फैलेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस बारे में से मैं संक्षिप्त में मस्जिद की बुनियाद के उद्देश्यों बयान करता हूँ। मस्जिद की बुनियाद का बुनियादी मक़सद यह है कि मुसलमान इकट्ठे मिलकर आपसी मुहब्बत और इत्तिहाद की फ़िज़ा स्थापित करते हुए एक ख़ुदा की इबादत करें जैसा कि अल्लाह तआला ने इबादत करने का हुक्म दिया है। फिर मस्जिद का दूसरा बुनियादी मक़सद यह है कि मानव जाति की सेवा का एक केन्द्र स्थापित किया जाए। हर इबादत करने वाले की एक अहम ज़िम्मेदारी यह है कि वे समाज के सारे अन्य लोगों के हुक़ूक़ अदा करे। अत: एक वास्तविक मस्जिद मुहब्बत, हमदर्दी और इत्तिहाद का केन्द्र है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अहमदिया मुस्लिम जमाअत का इतिहास इस बात पर गवाह है कि दुनिया में जहां भी हमने मस्जिद स्थापित की हैं , जो लोग इन मस्जिद में इबादत करते हैं, वे अन्य नागरिकों से हमदर्दी, मुहब्बत और ख़ुलूस में पहले से बढ़कर तरक़्क़ी करते हैं। अगर हमारी मस्जिद किसी बात पर अहमदियों को उकसाती हैं तो इंतिहापसंदी या दहशतगर्दी नहीं बल्कि सिर्फ़ मानव जाति की सेवा पर और इस बात पर उकसाती हैं कि हम अपने दिल अन्य लोगों के लिए खोलें। हमारी मस्जिद समाज में हर तबक़ा फ़िक्र से सम्बन्ध रखने वाले लोगों के मध्य बराबरी पैदा करने और भाईचारा पैदा करने के बारे में से हमारे इरादा को और

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 25 July 2019 Issue No. 30

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

अधिक मज़बूत देती हैं और समाज से हर किस्म की नफ़रत, इतिहापसंदी और भेदभाव को ख़त्म करने में सहायक हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यह शहर अपने भाईचारा की वजह से मशहूर है। और यक़ीनन हमारी यह नई मस्जिद इस बात की निशानी है और हमारे इस इरादा का प्रकटन है कि हम इस शहर में और आसपास में मुहब्बत, भाईचारा और बराबरी फैलाने के लिए पहले से बढ़कर कोशिशें करेंगे।

यह दावा करना तो बहुत आसान है, लेकिन हमारा इतिहास साबित करता है कि यह दावे खोखले नहीं बल्कि हक़ीक़त पर आधारित हैं। हम आज तक यही कोशिश करते आए हैं कि हम जो तब्लीग़ करते हैं वे कर के भी भी दिखाएं। अत: मैं यक़ीन से भरा हुआ हूँ कि स्थानीय लोगों जल्द ही स्वीकार कर लेंगे कि यह मस्जिद जिसे बैतुल आफ़ियत का नाम दिया गया है जिस का शब्दिक अर्थ ही हिफ़ाज़त तथा सुरक्षा करने वाला घर है, यह सारे समाज के लिए वास्तविक अमन का कारण बनेगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसके अति-रिक्त में यह बात भी बिलकुल स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि अमन के लिए और इन्सानियत की सेवा के लिए हमारा इरादा सम्पूर्ण रूप से हमारे धर्म और मज़हबी शिक्षाओं की वजह से है।

जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने जिन्हें हम मसीह मौऊद तथा मह्दी माहूद स्वीकार करते हैं दावा फ़रमाया कि आप मसीह मुहम्मदी हैं और फ़रमाया कि आप मूसा अलैहिस्सालम के बाद आने वाले मसीह के अमन पसंद तरीक़ा पर अनुकरण करने वाले हैं और यह ऐलान फ़रमाया कि आपको अल्लाह तआला की तरफ़ से दो महान उद्देश्यों को देकर भेजा गया है।

पहला यह कि मानव जाति को अपने सृष्टा की तरफ़ ले जाया जाए और सृष्टि को सृष्टा के हुक़ूक़ अदा करने की तरफ़ ध्यान दिलाया जाए। दूसरा मक़सद यह है कि आप मानव जाति को ध्यान दिलाएँ कि वे इन्सानी आचरण का सम्मान करें और एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करें। अत: ये सारी अहमदी मुसलमानों का फ़र्ज़ है, जिन्होंने मसीह मौऊद एवं महदी माहूद की बैअत की है कि वे ख़ुदा तआला का क़ुरब प्राप्त करने और मानव जाति की सेवा का कोई अवसर जाने ना दें। यह वह शिक्षा है जिसकी हमें कुरआन करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कई बार शिक्षा दी है।

सूरा निसा की आयत 37 में अल्लाह तआला फ़रमाता है: और अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज़ को इस का शरीक ना ठहराव और माता पिता के साथ एहसान करो और क़रीबी रिश्तेदारों से भी और यतीमों से भी और मिस्कीन लोगों से भी और रिश्तेदार पड़ोसियों से भी और ग़ैर रिश्तादार पड़ोसियों से भी। और अपने साथ बैठने वालों से भी और मुसाफ़िरों से भी और उनसे भी जिन के तुम्हारे दाहने हाथ मालिक हुए। यक़ीनन अल्लाह उस को पसंद नहीं करता जो गर्व करने वाला (और) शेख़ी बघारने वाला हो।

कुरआन करीम की यह एक आयत ही आचरण और इन्सानी हुक़ूक़ के चार्टर का एक महान उदाहरण है। यह अमन स्थापित करने की एक सुनहरी राह और भाईचारा स्थापित करने का माध्यम है। अल्लाह तआला इस आयत करीमा में नसीहत फ़रमाता है कि अपने माता पिता और रिश्तेदारों से प्यार और मुहब्बत से बर्ताव करो। अल्लाह तआला हुक्म देता है कि समाज के कमज़ोर वर्ग को साथ लेकर चलो और उनकी मदद करो, जैसा कि यतीमों और अन्य लोगों जो किसी भी तरह किसी महरूमी का शिकार हैं। फिर उस के बाद पड़ोसियों से अच्छा सुलूक करने का अलग से ख़ासतौर पर ज़िक्र किया गया है। मुसलमानों को शिक्षा दी गई है कि वे अपने पड़ोसियों से प्यार करें और उनकी हिफ़ाज़त करें और ज़रूरत पड़ने पर प्रत्येक समय उनकी मदद करने को तय्यार रहें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैं यह भी बताता चलूं कि इस्लाम में पड़ोसी की प्रशंसा बहुत व्यापक है। इस में सिर्फ वे लोग शामिल नहीं जो आपके क़रीब रिहायश रखते हैं बल्कि दूर रहने वाले भी शामिल हैं, साथ सफ़र करने वाले, साथ काम करने वाले, मातहत और अन्य बहुत से लोग भी पड़ोसी की प्रशंसा में शामिल हैं। वास्तव में कुरआन करीम ने बयान फ़रमाया है कि मुस्लिम शहर या क़स्बे में रहने वाले सारी लोगों ही पड़ोसी हैं।

इस्लाम के पैग़ंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी कई बार इस तरफ़ ध्यान दिलाया है कि मुसलमान अपने पड़ोसीयों के हुक़ूक़ अदा करें। आप ने तो यहां तक फ़रमाया है कि अल्लाह तआला ने इस क़दर पड़ोसी के हुक़ूक़ अदा करने की तरफ़ ध्यान दिलाया कि आप ने समझा कि शायद अल्लाह तआला पड़ोसी को विरासत में भी हक़दार ठहरा देगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: अगर हम ने फ़िलाडलफ़िया में मस्जिद बनाई है और यहां अहमदी मुसलमानों की एक जमाअत स्थापित की है, तो यह इस नीयत से किया है कि हम इस शहर की बुनियाद तथा तरक़्क़ी में अपना हिस्सा डालें और इस शहर के रहने वालों की सेवा करें। अब जबकि इस मस्जिद का उद्घाटन हो गया है। अब यहां रहने वाले सारी अहमदी अन्य सारी नागरिकों को अपना पड़ोसी समझेंगे और इस बात को महसूस करेंगे कि इन पड़ोसियों के बहुत से हुक़ूक़ हैं और फिर इन हुक़ूक़ की अदायगी के लिए अपनी भरपूर सलाहीयतें काम में लाएँगे। जब भी आप में से किसी को मदद की ज़रूरत पड़ेगी, हम अहद करते हैं कि जिस तरह भी हम मदद कर सकें हम करेंगे। हर रंज तथा ग़म के अवसर पर हम अपने पड़ोसियों के आँसू पोंछने , उनकी मदद करने और उन्हें आराम पहुंचाने के लिए तय्यार होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने फ़रमाया: अत: मुझे यक़ीन है कि आप ये सब होता ख़ुद देखेंगे। जहां इस मस्जिद ने इस शहर में एक उम्दा इमारत की वृद्धि की है इस से कहीं ज़्यादा यह मस्जिद रुहानी तौर पर इस शहर में और आसपास में प्यार तथा मुहब्बत फैलाते हुए इस शहर और इस समाज को और अधिक ख़ूबसूरत करने का कारण बनेगी। यह मस्जिद बिना किसी मज़हब के अन्तर, रंग तथा नस्ल के सारे अमन पसंद लोगों के लिए रोशनी और उम्मीद की किरण साबित होगी।

इन शब्द के साथ में उम्मीद करता हूँ और दुआ करता हूँ कि सारे लोग जो इस शहर के वासी हैं, इस बात को छोड़ते हुए कि वे कौन हैं और किस मज़हब से सम्बन्ध रखते हैं, इकट्ठे मिलकर समाज के आपसी लाभ की लिए काम करेंगे और वास्तविक और चिरस्थायी अमन वाला समाज स्थापित करने की कोशिश करेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यह कहा जाता है कि फ़िलाडलफ़िया पहला colonial शहर है, जिस ने इस देश में मज़हब की आज़ादी और इबादत की आज़ादी का क़ानून पास किया। इसी तरह यह कि यह वह तारीख़ी शहर है जहां Declaration of Independence पर दस्तख़त किए गए थे, अत: इस शहर की एक गर्व योग्य इतिहास है। मेरी दुआ है कि इस शहर के रहने वाले अपने महान इतिहास को ध्यान में रखें और भविष्य में भी यह तारीख़ी रिवायतें आपकी क़ौमी निशानी के तौर पर जानी जाएं।

मेरी दुआ है कि यह शहर हमेशा के लिए आज़ादी मज़हब की शम्मा बन जाए और इस शहर का हर वासी ना सिर्फ इस शहर में बल्कि सारी रियासत अमरीका और फिर सारी दुनिया में अमन स्थापित रखने के लिए अपना किरदार अदा करने वाला हो।

यद्यपि हमारी संख्या यहां थोड़ी है , मैं यक़ीन दिलाता हूँ कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत हमेशा ऐसे प्रोग्रामों का हिस्सा रहेगी और मदद उपलब्ध करने के लिए तय्यार रहेगी। अल्लाह करे कि वास्तविक अमन सारी शहरों और देशों में ग़ालिब आ जाए। आख़िर पर में आप सब का इस प्रोग्राम में शामिल होने पर शुक्रिया अदा करता हूँ। अल्लाह आप सब पर अपना फ़ज़ल फ़रमाए। शुक्रिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का यह ख़िताब 6 बजकर 27 मिनट तक जारी रहा। आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई। हुज़ूर अनवर के ख़िताब के समापन पर मेहमानों ने देर तक खड़े हो कर तालियाँ बजाएँ। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने स्टेज पर बैठे हुए मेहमानों को तोहफे प्रदान फ़रमाए। इस के बाद डिनर का प्रोग्राम हुआ। खाने के बाद मेहमानों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की। मेहमान एक क़तार में हुज़ूर अनवर से मिलने आते रहे, हुज़ूर अनवर गुफ़्तगु फ़रमाते, मेहमान तस्वीरें भी बनवाते। फिर हुज़ूर अनवर कुछ देर के लिए अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। साढ़े आठ बजे हुज़ूर अनवर ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

(शेष.....................)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad